ST. JOSEPH'S MISHRI SINGH VISHWAMOHINEE MEMORIAL TEACHERS' TRAINING COLLEGE
MSV NAGAR, DALSINGSARAI, SAMASTIPUR, BIHAR-848114
Rec. by ERC NCTE, Affiliated to LNMU Darbhanga and BSEB Patna
Web.: sjmsvmttc.org, E-mail: stj_training@rediffmail.com

सेमिनार प्रतिवेदन
(Seminar Report)

संत जोसेफ्स मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय, समस्तीपुर

के तत्वावधान में

''Role of Information And Communication Technology In Teaching- Learning Skills''

विषय पर आयोजित

राष्ट्रीय सेमिनार

दिनांक–18.03.2023 से 19.03.2023 तक

संत जोसेफ्स मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, एम. एस. वी नगर, दलसिंहसराय, समस्तीपुर बिहार के द्वारा दिनांक 18 मार्च 2023 से 19 मार्च 2023 तक ''Role of Information And Communication Technology In Teaching- Learning Skills'' विषय पर दो–दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस राष्ट्रीय सेमिनार का प्रमुख उद्देश्य प्रतिभागियों में शिक्षण एवं अधिगम में सूचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग करने के विभिन्न आयामों एवं अन्तर्निहित तत्वों की समझ विकसित करना है। यह सेमिनार सूचना एवं संचार तकनीकी की वर्तमान और आगामी भूमिका पर चर्चा करने के लिए शिक्षकों, प्रशिक्षकों, पेशेवरों और योजनाकारों के लिए एक गतिशील मंच प्रदान करने का एक प्रयास है, यह शिक्षकों के लिए वांछनीय विभिन्न शिक्षण कौशल के विकास की सुविधा भी प्रदान करता है। इस सेमिनार के सभी प्रतिभागियों को अद्यतन जानकारी, विचारों के आदान–प्रदान से लाभ मिलेगा और यह उनके शिक्षण–अधिगम को आसान और अधिक उत्पादक बना देगा। यह विभिन्न समुदायों को शैक्षिक नेटवर्क से जोडते हुए और संसाधनों का उपयोग करते हुए शोध कार्य में ज्ञान–निर्माण और सहयोग के लिए उपकरणों को अद्यतन करने का भी सुझाव देगा।

विद्यापति की पावन भूमि पर आगत अतिथितियों का स्वागत मिथिला परंपरा के अनुसार किया गया। सभी सम्मानित अतिथियों को अंगवस्त्र, मिथिला पाग, जीवन रूपी पुष्पगुच्छ एवं मेमेंटो प्रदान कर स्वागत किया गया।

सम्पूर्ण भारत के विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षाशास्त्र ज्ञानानुशासन के संकाय सदस्यों एवं अध्येताओं के लिए आयोजित इस राष्ट्रीय सेमिनार में देश के चार राज्यों एवं 9 जिलों से कुल 449 वक्ताओं, सदस्यों एवं अध्येताओं ने सहभागिता की। 2 दिनों के उद्धाटन एवं समापन सत्र सहित तीन तकनीकी सत्रों में सेमिनार हुआ। मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल व्याख्यान श्रृखंला एवं समापन सत्र के साथ सेमिनार सम्पन्न हुआ। इस राष्ट्रीय सेमिनार में कुल 22 विशेषज्ञों ने अपनी विद्वता पूर्ण व्याख्यान, उद्बोधन एवं व्यवहारिक अनुभव पर आधारित तकनीकी सत्रों के माध्यम से समस्त प्रतिभागियों का ज्ञानवर्धन किया एवं उनके अनुभवों को संवर्धित किया।

18 मार्च से 19 मार्च, 2023 को आयोजित ''Role of Information And Communication Technology In Teaching- Learning Skills''

उद्घाटन सत्र : (समय– 10:30 AM- 01:30 PM)

दो–दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अवध किशोर राय (Former Vice-Chancellor, B.N.M.U. Madhepura & Tilka Manjhi Bhagalpur University) ने किया।

राष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. अवध किशोर राय एवं सम्मानित अतिथिगण

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में **प्रो. अवध किशोर राय** (Former Vice-Chancellor, B.N.M.U. Madhepura & Tilka Manjhi Bhagalpur University) उपस्थित थे। **डॉ. सुप्रिया कुमारी** (प्राचार्या, संत जोसेफ्स मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय) ने अपने शब्द सुमनों से अतिथियों का स्वागत किया तथा कहा कि इस सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. अवध किशोर राय किसी परिचय के मोहताज नही है, वे रचनात्मक व्यक्तित्व के धनी है। इन्होंने बताया कि हमारे महाविद्यालय के लिए यह एक अत्यंत ही गौरवशाली दिन है क्योंकि पहली बार हमारे महाविद्यालय में राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की आवश्यकता और महत्व है। यह वर्तमान में मानव जीवन की आवश्यकता ही नही है अपितु जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इन भावनाओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत सेमिनार का आयोजन किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस सेमिनार के माध्यम से विचारों, सूचनाओं एवं ज्ञानों के आदान–प्रदान द्वारा हम सभी लाभान्वित होंगे और अपने क्षेत्र में इसका सफलता पूर्वक प्रयोग करने में सक्षम हो सकेंगे।

प्राचार्या, डॉ० सुप्रिया कुमारी स्वागत भाषण देते हुए

प्रो. आशीष श्रीवास्तव (Key Note Speaker, Dean, School of Education Mahatma Gandhi Central University Motihari, East Champaran, Bihar) ने सेमिनार के प्रतिभागियों के समक्ष ICT से संबंधित बातें रखी तथा उन्हें इसके लक्ष्यों एवं उद्देश्यों से अवगत कराया। इन्होंने बताया कि यह शीर्षक आपने जो चुना है, यह बहुत महत्वपूर्ण है, कोविड–19 के भयावह दौर में हमने सिर्फ एक ट्रेलर देखा है तकनीकी का, अभी पुरी पिक्चर आनी बाकी हैं। खासकर तब जब हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्व को देखते है। Theory & Practices के बीच में जो गैप है उस गैप को दूर करने की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी Teacher Education है, जिसके लिए यह कार्यक्रम हो रहा है तकनीकी एक ऐसा पक्ष है जिसमें रोज बदलाव आ रहे है। इस बदलाव के साथ जो Generation Gap है उसके साथ हम सबको 'को–कप' करना होगा। ये तकनीकी हमारे लिए जरूरी भी हैं, चिंता भी हैं, विश्वविद्यालय आयोग 1948 में राधाकृष्णन जी लिखते हैं, Where is the wisdom? We have lost in knowledge, Where is the knowledge? We have lost in information. The Cycle is even 20th century; bring the smarter from the God nearer to test. Wisdom कहाँ है? प्रज्ञा विवेक कहाँ है? उसको हमने ज्ञान में खो दिया। ज्ञान को हमने सूचनाओं में खो दिया, जब हम तकनीकी के इन्टरवेंशन को स्वीकार करने जा रहे हैं तब चिंता है। अब हम तकनीकी के महत्व को समझ रहे है, कि यह हमारा अंग बन गई है। यह च्वाईस नही Compulsion है। Teacher Education के पार्ट में इसका दायित्व और बढ़ जाता है। तकनीकी को हम इस तरह अपनाये कि Information to Knowledge, knowledge to wisdom तक पहुँचे क्योंकि तकनीकी को हम Ignore नहीं कर सकते हैं। मैं अक्सर एक व्यंग सुनाता हूँ–स्वामी रंगनाथन जी से एक बार पूछा गया कि शिक्षा क्या है? उन्होंने कहा कि शिक्षा एक रहस्यमयी चीज है, जो प्रोफेसर के लेक्चर रूप से निकलती है, Student के नोटबुक तक पहुँच जाती है, कलम के माध्यम से बिना दोनों के दिमाग के इस्तेमाल के। ये जो Information से, Culture से, Emancipation से Self Realization तक जाना है इसके लिए तकनीकी में हमें वो इनपुट लाने होंगे ताकि जो wisdom की बात है, Reflection की बात है, चितंन की बात है वो आ सके।

कस्तूरीरंगन अपने ड्राफ्ट (N.E.P.2020) के कवरिंग लेटर में लिख रहे है कि N.E.P.2020 का पुरा डॉक्यूमेंट पांच आधार स्तभों पर आधारित है वो हैं Access(पहुँच), Equity(हिस्सेदारी), Quality(गुणवत्ता), Affordability(सामर्थ्य) और Accountability (जवाबदेही)

उच्च शिक्षा की दुनिया में 26.3 % से G.E.R. (Gross Enrollment Ratio) को 50 % ले जाना हैं, स्कूली शिक्षा की दुनिया में इस G.E.R.(Gross Enrollment Ratio) को 100% ले जाना हैं। National Knowledge Commission कि रिपोर्ट 2005 कहती है कि उस समय के International GER को प्राप्त करने के लिए भारत को 2500 विश्वविद्यालय की स्थापना करनी होगी। N.E.P. 2020 का डक्यूमेंट 29 जुलाई 2020 को आया। पहला एक वर्ष जब पुरा हुआ तो शिक्षा मंत्रालय ने एक कार्यक्रम रखा था जिसमें मुख्य अतिथि प्रधानमंत्री थे, वो अपने भाषण में Digital Learning Technological Intervention, Digital Intervention जैसे शब्दों का उपयोग कर रहे थे। फिर कुछ महीने बाद भारतीय परिदृश्य में Digital University Announce हो जाती है। N.E.P. 2020 के English version के Documents page No-05, 06 पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के गाईडिंग प्रिंसिपल दिये गये है। उसमे एक प्रिंसिपल है– Extensive use of technology both in teaching-learning process In governance. आप Access Pillar को देखिये, इसीलिए मैं कहता हूँ कि ये तकनीकी Choice नहीं Compulsion है, (Technology is not a choice but a compulsion) दिमकों को पढ़ना नहीं आता, लेकिन चाट जाता है किताब। अपने छात्रों को ऐसा दिमक बनने से बचाए। आजकल पुस्तकालय में जाने का फैशन कम हो गया है। छात्रों को Information से knowledge तक ले जाये, knowledge से wisdom तक ले जाये। Aim of Education क्या है? Aim of education is all round development of Student. आप इस all round development से क्या समझते है? Balance development a cognitive domain, effective domain and Psychomotor domain. Head, Heart and Hand का संतुलित विकास करना है। तकनीकी के खतरे को यहीं समझना होगा। शिक्षक महत्वपूर्ण था, है, और रहेगा (Teacher was important, teacher is important and teacher will important)। तकनीकी को हम नियंत्रण करें, यह हमें नियंत्रण ना करें। तकनीकी हमारा साधन है साध्य नहीं है, तकनीकी Means है End नहीं। जब हम तकनीकी को साधन के रूप में देखेंगे तब तक कोई समस्या नहीं है लेकिन जैसे ही हम तकनीकी को साध्य के रूप में देखेंगे तब Head, Heart and Hand में असंतुलन आयेगा। तब इस असंतुलन को हम afford नहीं कर पाएंगे अमेरिकन सिस्टम ऑफ एजुकेशन में cognitive domain, यानि Head, के उपर बहुत जोड़ दिया जाता है। Heart कहीं न कहीं उपेक्षित

रह गया। भारत में शिक्षा हमेशा समाज का विषय रही है। इसीलिए यहां Head, Heart and Hand महत्वपूर्ण है। विवेकानंद की पुस्तक 'शिक्षा' किताब में बड़ी सुन्दर एनालॉगी देते हैं, वो कहते हैं कि जिस प्रकार सरसों के बीज को हाथ पर रखकर पेड़ नहीं बना सकते उसी तरह हम पढ़ा नहीं सकते हैं। सरसों के बीज को हमें पेड़ बनाना है तो हमें उसे मिट्टी में डालना होगा, धूप दिखाना होगा, पानी डालना होगा, सूरक्षा देना होगा। आप सिर्फ Facilitate कर रहे हैं, पेड़ बनने की पोटेंशियल उस बीज में है। विवेकानंद जी कहते है कि यही चीज एक शिक्षक पर भी लागू होता है। जब मैं पुरी एजुकेशन के परिभाषा को Revisit करता हूँ तो विवेकानंद की परिभाषा सबसे सुन्दर लगती है– "Education is the Manifestation of Perfection in already in man." शिक्षक का कार्य है उस Perfection को बाहर लेकर आना, तकनीकी एक साधन है ताकि हम उस Perfection को बाहर निकालें। जॉनडेवी कहते हैं हम आज वैसा पढ़ायें जैसा हमने कल पढ़ाया था तो हम आने वाले बच्चों के भविष्य को बर्बाद करेंगे। श्रीवास्तव ने कहा कि परिवर्तन अपरिहार्य है (Change in Inevitable) परिवर्तन प्रकृति का नियम है, इस परिवर्तन को जिसने आत्मसात कर लिया, उसने Sustain भी किया, उसने ग्रोथ भी किया और वह समाज आगे बढ़ा। इस संच्चाई को हमें स्वीकारना होगा। हम 21वी सदी के तीसरे दशक में खड़े होकर technology पर बात कर रहे हैं 17 Sustainable Goal होते हैं U.N.D.P.(United Nation Development Programme) की साईट खोलियें, गोल न. 4 देखिये, उसके 7 टारगेट हैं, उसे पढिये, इन्होंने TPACK (Technical, Pedagogical, Assessments, Content, Knowledge) को बताया। प्रो० श्रीवास्तव ने 'ASMA' (Adoption of Social Media & Accediamiya) रिपोर्ट की चर्चा किया।

N.E.P. 2020 कहती है Multidisciplinary and Holistic Education achieve करना है। Multidisciplinary का ये आईडिया हमको समझ में आ जाए इसलिए वो तक्षशिला, नालंदा जैसे संस्थानों का उदाहरण देते हैं, उन संस्थानों से निकले लोगों का उदाहरण देते है। बाण, कादम्बरी के 64 कलाओं का जिक्र करते है। इन्होंने Intelligence Quotient, Spiritual Quotient, Emotional Quotient, Digital Quotient को भी बताया, साथ ही इन्होंने Cultural transformation, increasing Education Demands and Advanced Technologies का भी जिक्र किया, इसके साथ ही इन्होंने सेमिनार के सफल आयोजन की शुभकामानाएँ भी दी।

Prof. Asheesh Srivastava (Dean, School of Education M. G. C. University Motihari) प्रतिभागियों को मार्गदर्शन करते हुए।

प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर (Professor & Dean, School of Education, Dean, School of Management, Head, Department of psychology, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi University Wardha, Maharastra) ने अपने उद्बोधन में बताया कि शिक्षक वास्तव में शिक्षकत्व को प्राप्त करता है जब वह अपने लिए नहीं अन्य के लिए जीना प्रारंभ करता है। विद्या की अविरल धारा को प्रवाहित करता है, ज्ञान का सृजन करता है और सक्षम मनुष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसे शिक्षकों को बनाने का कार्य यह संस्था कर रही है, इन आयोजनों के माध्यम से शिक्षक, छात्रों के अनुभवों में वृद्वि करने का कार्य कर रही है। अपने वक्तव्य में शिक्षा आयोग 1964–66 का संन्दर्भ

लेते हुए उन्होंने कहा कि इस आयोग में एक बात लिखी हुई थी, किसी भी राष्ट्र का प्रारब्ध उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा होता है (The future of any nation is being made in its classes.) शिक्षक उस राष्ट्र के प्रारब्ध के शिल्पकार होते हैं। हमें अपनी भूमिका को इस देश के प्रारब्ध की निर्मितिकर्ता के रूप में स्वीकारणी चाहिए और ईमानदारी से उस दिशा में प्रयत्न करनी चाहिए। शिक्षक के तीन कार्य हैं–सूचित करना (To Inform), प्रेरित करना (To Inspired), प्रभावित करना (To Influence), सूचना के प्रसारण की बात अब तकनीकी आने के कारण शिक्षकों के हाथ से निकल चुकी है, अब सूचना गूगल से मिल जाता है। अब शिक्षकों को प्रभावित करना है और अभिप्रेरित करना है लेकिन सूचना पुरी तरह से गई नहीं है। क्या तकनीकी शिक्षक को Replace कर देगी? No Body and Nothing can replace teacher. Technology is not going to replace the teacher but technologically enabled teacher is to replace the conventional teacher that is for sure. आने वाला समय ऐसा है कि आप परंपरागत तरीके से पढ़ायेंगे तो आपकी तुलना में वह अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला माना जाएगा जो तकनीकी रूप से सक्षम है। प्रो० ठाकुर ने कहा कि हमारा दायित्व है कि हम तकनीकी को समझे, अपने क्रियाकलाप में आत्मसात करें। आज के समय में हम Teaching Learning Skill को Technology के भूमिका के परिप्रेक्ष्य में समझने की कोशिश कर रहे है वह जरूरी क्यों है? इस देश की आबादी 140 अरब के करीब है। इस देश में 15 लाख से ज्यादा विद्यालय और 900 से उपर विश्वविद्यालय एवं 40000 से उपर महाविद्यालय हैं जहाँ विभिन्न स्तरों पर 1 करोड के लगभग शिक्षक हैं, 33 करोड़ के लगभग विद्यार्थी है। इन 1 करोड़ शिक्षक पर 33 करोड़ विद्यार्थी के पठन–पाठन की जिम्मेदारी है, इन बच्चों को हम समुचित शिक्षा कैसे दें, हम शिक्षक किस तरह से आई.सी.टी. का इस्तेमाल करें। शिक्षक अपनी भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुधारें एवं कौशल परक बनाएं। अपने कार्य के प्रति एकाग्रचित रहें, तब आपमें कुशलता आएगी। भारत सरकार के तरफ से शैक्षिक संस्थानों के लिए ई–लर्निंग संसाधनों के बहुत से एवेन्यू खोले गयें जैसे DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge sharing) , PME VIDYA PORTAL, NISHTHA GUIDELINES (National Initiative For School Heads And Teachers Holistic Advancement) National Digital Library IIT Bombay, E-Pal Portal, Swayam Portal (Study webs of Active-learning for young Spiring minds).

इन्होंने महाभारत के एक प्रसंग का उल्लेख किया है, महाभारत में दूर्योधन से श्रीकृष्ण ने पूछा कि दूर्योधन, कौरव और पांडव तुम दोनों ने एक ही गुरू से शिक्षा पायी है, एक ही प्रकार का पाठ्यक्रम पढ़ा, एक ही प्रकार की शिक्षण विधि के अर्न्तगत तुमने शिक्षा प्राप्त की, एक ही प्रकार की परीक्षा थी और परिणाम भी एक ही प्रकार की थी। उपाधि एक ही प्रकार कि मिली फिर ऐसा क्यों कि वो धर्म के रास्ते, तुम अधर्म के रास्ते। पता नहीं कौरव थे, पांडव थे या नहीं पर जो कथन है वह बड़ा महत्वपूर्ण है । दूर्योधन कहता है हे कृष्ण–

''जानामि धर्म न च में प्रवृति : ।
जानाम्यधर्मं न च में निवृति'' : ।।

अर्थात, मैं धर्म के बारे में जानता हूँ किन्तु मेरी उसमें प्रवृति या रूचि नहीं है और मैं अधर्म के बारे में भी जानता हूँ किन्तु उसमें मेरी निवृति (छूटकारा) नहीं है। (I Know about dharma but I have no inclination or intrest in it and I also know about Adharma but I have no intrest in it.) किसमें प्रवृत होना है, किसमे निवृत होना है उसका बोध हमारा विवेक ही कराएगा। एक शिक्षक कि सही कौशल तो वह ही है जो छात्रों को विवेकयुक्त बनायें। Digital Infrastructure, e-Learning Environment जितना है पर्याप्त हैं। हम डिजिटल डिवाईस की बात करते है यह Conventional रूप में बिल्कुल नहीं है। डिवाइस यह है कि डिजिटली जागरूकता है या नहीं, डिजिटली कनसेस है या नहीं, इथीकली डिजिटल Infrastructure को समझ पा रहे है या नहीं समझ पा रहे हैं यह कार्य शिक्षक का है। इसके साथ ही इन्होंने राष्ट्रीय सेमिनार के सफल आयोजन की शुभकामनाएँ भी दी।

सेमिनार में अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर
(Professor & Dean, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi University Wardha, Maharastra)

अनुराधा कुमारी (सहायक प्राध्यापिका, संत जोसेफ्स मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय) ने दु टूक मैथिली में अपना उद्बोधन दिया। सबसौ पहिले ई संस्था 'संत जोसेफ्स मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय' के तरफ सै अहां सब अतिथिगणक, विद्ववत जनक, प्राध्यापकगण, शिक्षा प्रेमी शिक्षकगण, शोधार्थीगणक, प्रशिक्षुगणक, मिडियाबंधु, शिक्षेकेत्तर कर्मचारीगणक, आ एत उपस्थित सबहक हम अनुराधा स्वागत करईत छी । मौसम के अनुसार, ऋतु के अनुसार ई चईत ऋतु चईल रहल अईछ। वाह्य आवरण आ आतंरिक उर्जा जे. ई. सेमिनार सं प्राप्त हैत,तकरा दुनु के यदि जोईर ली त हमसब कही सकईत छी जे बसंतक अनुभव भ रहल अईछ। वसंत निर्माण के ऋतु होईत अईछ। सेमिनार सेहो बौद्विक रूप सअ हमरा सब के निर्मित करईत अईछ। अई दुनु दिन में जे हमर विद्वान लोक आयल छईथ, तिनकर जे विद्ववतापूर्ण विचार छैन, तई सं स्वयं के उर्जज्वलित करब, संगहि अपन एकटा दृष्टि सेहो कायम करब, जकर उपयोग आब वाला समय में हमर समाज करत, शिक्षा जगत करत। हमर गांम–घर सं ओ प्रकाशपूंज निकईल, राज्य के सीमा के टपईत सम्पूर्ण देश में परिव्याप्त होईत, आ विश्वगुरू के जे अतीत अईछ, तकरा भविष्य में स्थापित जरूर करत। अहां सब ई बौद्धिक वर्षा में शामिल भेलऊ ताहिक लेल हम धन्यवाद दईत छी।

अनुराधा कुमारी (सहायक प्राध्यापिका, संत जोसेफ्स मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय)
मैथिली में अपना वक्तव्य देते हुए।

प्रो. ललित कुमार (Patna University, Former Dean, Faculty of Education, Former Head, Department of Education, Former Principal, Patna Training College, Patna) ने अपने उद्बोधन में सेमिनार के विषय का जिक्र करते हुए कहा कि आपका जो Topic हैं उसके तीन Key Concept हैं –Information, Communication, Technology, मैं जो आज आपको कुछ कहने वाला हूँ, वो इन सारे Key Concept व मानवीय पक्ष पर है और आपको ये बताने का

प्रयास करता हूँ कि इसमे मशीन का पक्ष बहुत कमजोर हो रहा है, महत्वपूर्ण, मानवीय पक्ष हो रहा है क्योंकि सूचना होता क्या है? जितने भी Facts हैं, Concept हैं, सिद्वांत हैं, ये सब कहाँ से आये हैं, किसने बनाया हैं? सूचना कल भी था, आज भी है और वो कहां है? आज तकनीकी यह कह रहा है Research Finding यह कह रही है। Information is everything. चाणक्य ने जो कहा–वह सूचना है, कैसे कहा, वह कम्यूनिकेशन है, information हमारे लिए जरूरी है लेकिन हमें वो सूचना मिले कहां से, एक तो सूचना को समझना दूसरा इस सूचना को समझने के क्रम में जाऊगां। थोड़ा आपको मनोविज्ञान के तरफ ले जाऊगां। आपने Cognitive of approach को पढ़ा और जब इसकी बात करते है तो Ultimately उसमें दो बातें होती है एक तो Insight learning जिसको आप जानते हैं। उसका दूसरा हिस्सा है Information Processing ये हम Information को Process करते है। दो System को आप समझे, एक तो आपके शरीर का Digestive system है खाते है धीरे–धीरे पचता है दूसरा आपका ये माइंड का System है। पेट के system को आप खाली कर सकते हैं लेकिन सूचना वाले सिस्टम को आप कभी खाली नहीं कर सकते है। मतलब यह जब Information Processing को हम समझेंगे तो यदि आपके पास इतना Information है या मिलता है तो उसका Processing अलग होगा लेकिन किसी के पास इतना ही सूचना होगा, जितना उसे आता है उसका Processing दूसरे तरह से होगा। अभी इस तकनीकी में, डिजिटल वर्ल्ड में तकनीकी की जो अवधारणा आया हमलोग स्मार्ट क्लास का Concept लेते है। Smart Class क्या है? मैनें एक जगह लिखा No class Can be a Smart Class if, it is well eqiped in the absence of bonafide teacher.

प्रो० कुमार ने कहा कि कौशल वही है जो हमारे भीतर है हम धारण करते है, जिसको हम Internalize करते हैं। Out Side the individuale there is no concept of Skill so, if you have to talk in terms of skill it is be internalize is important in the process. आगे प्रो. कुमार ने बताया कि Physical cepration क्या है? जैसे यदि आप मेरी आवाज का रिकॉडिग कर रहे है इसी समय मुझको आप सुन रहे है तो ये Sincronus Communication है। Sincronus types of Technology हैं दूसरा Asincronus जो अभी आप रिकॉडिग करके दे देंगे तो बाद में लोग सुन लेंगे, Real time Situation में उपलब्ध नहीं है दूसरा interactive Media, Non Interative Media जो Print Midia है हांलॉकि उसको भी Interative बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। Open System के द्वारा सबसे ज्यादा Analog techonology जो बाद में Relivant नहीं रहे हैं सभी अर्थपूर्ण है और हमको महत्वपूर्ण सूचना देते हैं। जितना भी तकनीकी है वो सब मानवीय पक्ष कर रहा है। ये सब हमारे Sense Organs पर ही Classified हुआ है।

उन्होंने बताया कि जब भी कोई नया Text आपको मिलता है तो उसे SQ3R, S-Stand for Survey. क्योंकि आप कालीदास तो नहीं हो सकते हैं, मत पढ़े सर्वे करें, ये एक स्किल है, फिर Question करें कि हमारे लिए क्या उपयुक्त है। when start to read, write and decide so, SQ3R is reading skill it is being imphished in distance learning. Managing is skill, learning is a skills. Hard skill subject का ज्ञान और Soft skill interpersonal दो तरह के Intelligence की बात हमलोग करते हैं, interpersonal तो Life हैं, Success के लिए जरूरी हैं Soft skills. successful जीवन के लिए और कक्षा–कक्ष में अच्छा पढ़ाने के लिए विषय का ज्ञान जो आपका है that is Hard Skill. So, learning is also a skills so internalize how to learn and life skill. Learning के बारे में हमने एक जगह लिखा the Relationships between learning and teching is like word displacement and perceived by physics. Learning outcome isculto the difference between with terminal behavior and the intering behavior. If the difference between terminal behavior and intering behavior is zero, it means learning outcomes is zero. It means learning is zero and that is why teaching is zero. यदि teaching के फलस्वरूप अधिगम नहीं हुआ तो ये That is skill and most importantly for adult learners life skills, these are the skills. यदि हम Techonology के Big Moments की बात करें तो Digital Technology तक पहुचने से पहले bigger Moment है जिस दिन हमने ज्ञान को, सूचना को Transmit करना शुरू किया था चाहे वो जैसे भी हो Preserve किया हो, Programme Learning जो Open System का जनक है इस आधुनिक age में इसमें इतनी बड़ी क्रांति है अपने आप में कि जब आप सुनेंगे तो इस Digital Teachnology को भूल जाएंगे। इन्होंने open Learning को Acess करने का तरीका बताया है, Text को Talkative भाषा में लिखता है, जैसे open System क्या करता है? Where you are not suppose to like a text but like you are talking in the text. Election Commission का एक ऑकड़ा है इस देश में 80 वर्ष या उसके उपर के लोग 1.80 करोड़ हैं the Most Productive as of a human life is 62-80 आजकल हम Formal System को Non Formal के साथ Coordinate करके कोविड जैसे परिस्थिति में काम कर रहे थे। आप ये समझे कि 90% किसी भी तरह के तकनीकी के इस्तेमाल में मानवीय पक्ष है, उसको हम प्रखर रखें और अपने यादाश्त को प्रखर रखें, अपनी सृजनशीलता को गति दे उसको दिशा देने की कोशिश करें।

सेमिनार में अतिथि वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए प्रो. ललित कुमार

Dr. (MS.) RAMAA Subbiah (Former Professor of Special Education and Dean of instruction, Regional Institute of Education, N.C.E.R.T. Mysore)

I want to congratulate this esteemed institution for selecting a relevant topic. Nowadays, we discuss pandemics frequently due to the ongoing COVID-19 pandemic. It has made us realize the importance of nature, and how it has supported us through technology, which has been around for about 10-20 years. However, there are people like me, who teach psychology or special education, that were hesitant to use technology in the classroom initially. I used to believe that teaching methods such as demonstration, project-based learning, and experiential learning were more important than technology. I wasn't much of a tech-savvy person, as Khushwant Singh once said, I like that some people have a fear of technology, also known as technophobia. For example, if I press the wrong button on my computer, I worry that my data might be erased. This makes me more cautious than when using pen and paper, where I can write and edit without fear of losing my work. Additionally, I am aware that if I make a mistake on video, it can be recorded, which makes me even more careful. Sensitization to technology has become more important during the pandemic, especially since many classes have moved online. In the past, I had only heard of video lessons for special education, but now we are all using technology for learning. This was a new challenge for me and required me to learn new skills. Thankfully, my institute organized orientation programs to help us learn how to use computers for online teaching. While it was difficult at first, with practice and instruction, I was able to adapt. One of the greatest challenges was using online learning during my internship. We had to train ourselves to teach and communicate with students remotely. We also had to teach children at the state, regional, and national levels, which required us to use English as the primary language of instruction. Technology now influences all aspects of our lives, from personal grooming to cooking to transferring funds. It is important to acquire the necessary skills to use technology effectively, as it is becoming more and more integral to daily life.Often, we assume that only younger generations are better at acquiring technological skills. However, when I didn't know how to approach a sentence or photos for my nephew's application form, I did my own research and consulted with other parents. This shows that we are all still learning how to use technology, and that there is no clear-cut distinction between teacher and learner. We should have a broad-minded approach and not be agitated to learn from others. Technology is a supplement and cannot think for us; we have to organize the information in a meaningful way to facilitate learning. Skinner made a significant contribution to teaching slow learners and those who cannot keep up with others by using the teaching machine. Now, we are using this technology for everyone, and even behavior modification is another contribution. We must modify our own behavior and adopt new teaching methods that incorporate technology. Computer-assisted learning is now called technology-enabled instruction or technological device, especially in the field of special

education, where we cater to people with sensory, communication, and developmental challenges. Inclusive education is the new concept, and we are moving towards integrated education in every classroom. The national policy of education and relevant acts give us the right to education, and ICT is going to play a significant role in realizing our goals.

Dr. Ramaa Subbiah Delivering the Guest of Honour Speech

डॉ. राकेश कुमार (Former Principal CTE, Bhagalpur & Dean Tilaka Manjhi Bhagalpur University) ने कहा कि आई. सी.टी. हमारे लिए अवसर के रूप में है या चुनौती के रूप में यह हम पर निर्भर करता है। जिस तरह सिक्का के दो पहलू होते हैं उसी तरह सेमिनार के तीन पहलू हैं। पहला पहलू था कि टॉपिक क्या डिसाईड करें? दूसरा पहलू था कि हम अपनी सोच को कैसे Involve करें? तीसरा पहलू था कि हमने जो सोचा था उसे कैसे क्रियान्वित करें ? वक्ताओं की सहभागिता, श्रोताओं की सहभागिता, प्रबंधन की सहभागिता किस स्वीकारिता के साथ हुई। जो बातें हम सुन रहे हैं, समझ रहे है क्या उसे यही तक सुनकर छोड़ जाएगें। एक चाईनीज Proverb हैं– I hear I forgate, I see I remember, I do I understand.

डॉ. राकेश कुमार सेमिनार में संबोधन करते हुए।

डॉ. डी. एन. सिंह (Former, Dean Faculty of Education, Department of L.N.M.U. Darbhanga) ने कहा कि आई.सी.टी के मुद्दे पर गहन विचार विमर्श हुआ है, हमारे सभी पूर्ववर्ती वक्ताओं ने इस विषय से संबंधित विशेष बातों को रखा है नई शिक्षा नीति जिसका मूल उद्देश्य शिक्षा का गुणात्मक विकास करना है। आज भारत की कक्षाओं में भारत के भविष्य का निर्माण हो रहा है। क्या वह निर्माण ये बड़े–बडे बिल्डिंग, बड़े–बड़े पुस्तकालय या आई.सी.टी. से साधन सम्पन्न विद्यालयों के द्वारा ही होता है। जब तक उसके संचालन के लिए कुशल शिक्षक नहीं होंगे जिनका विषय वस्तु पर नियंत्रण न हो तब तक वह सही मायने में अच्छे शिक्षक का निर्माण नहीं कर सकते हैं। उन्हीं शिक्षकों

के द्वारा भारत के इन नौनिहाल बच्चों को उनकी कक्षाओं में उनके द्वारा भविष्य का निर्माण किया जाता है। अध्यापक शिक्षा में निश्चित रूप से इस नई शिक्षा नीति में भी बार–बार इसकी गुणात्मक विकास पर बल दिया गया है, 4 Years Integrated B.Ed. Programme के महत्व को दर्शाया गया है और उसके माध्यम से हम अपने बच्चों को, अपने छात्रों को, अच्छे शिक्षक का निर्माण कर देने के लिए प्रयत्नशील हो लेकिन हम सभी जानते है कि आई. सी.टी. एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम अपने छात्रों को उसके गुणात्मक सुधार में मदद पहुचा सकते है। उनके विकास में मदद कर सकते हैं, लेकिन इस अध्यापक शिक्षा की स्थिति इस नई शिक्षा नीति में एक पेन्डूलम की तरह हो गई है। आशीष जी ने G.E.R. (Gross Enrollment Ratio) का टॉपिक तो दिखा दिये उनको कि आप खुश हो जाईये आपका महाविद्यालय सुरक्षित रहेगा, जिस राज्य में आज तक पटना विश्वविद्यालय को छोड़कर एक शिक्षा विभाग की स्थापना सरकार नहीं कर सकी है। देश के आजादी प्राप्ति के लगभग 75 साल हो गये आप वहां इस बात की अपेक्षा कैसे रखते है कि उनको उसके माध्यम से विकास का मौका मिलेगा, सुरक्षा का मौका मिलेगा। अध्यापक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा थी जिसमे साधारण वर्ग के बच्चें पढते थे रोजी– रोटी के लिए शिक्षक की नौकरी मिल जाए। क्या होने जा रहा है? आप आई.आई.टी. को देने जा रहे है। केन्द्रीय विश्वविद्यालय में चल रहा है, राज्य के पास पैसा नहीं है कि वे अपना शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय को, शिक्षा विभाग को स्थापित कर सम्पन्न बना सके और अध्यापक शिक्षा की ओर अधिक गुणात्मक विकास में सहयोग प्रदान कर सकें। इसीलिए यह जरूरी है पहले उन मौलिक बातों पर ध्यान दिया जाए। आज क्यों स्व वित्त पोषित महाविद्यालय वालें डरे हुए है ये 400 कॉलेज का क्या भविष्य होगा? इसको कौन चलाएगा? 4 वर्षीय डिग्री प्रोग्राम की बात तो एक स्वरूप तय कर दिया कि आप प्रथम वर्ष पास करके पढ़ाई छोड़ देंगे तो हम Certificate का डिग्री दे देंगे। 2 वर्ष पुरा करेंगे तो Diploma Certificate का डिग्री दे देंगे और 3 साल का कोर्स पुरा करेंगे तो Degree का Certificate दे देंगे। 4 साल पुरा करेंगे तो हम M.A. की डिग्री दे देंगे। क्या यही व्यवस्था में हुआ? ये 4 Years Integrated Programme के बच्चें जब एक साल का कोर्स प्राप्त कर लेंगे तो कहां जाएंगे, 2 साल का कोर्स प्राप्त कर लेंगे तो कहां जाएंगे। सरकार सोचें, हम सभी बुद्विजीवी सोचें जो नियम बना रहे वह भी सोचें। आज स्थिति ऐसी हो गई है कि प्राईवेट शिक्षक प्रशिक्षण के प्रोफेसर 20–25 हजार रूपये वाले वेतन को छोड़कर एक प्राईमरी शिक्षक की नौकरी ज्वाईन कर लेते हैं। इन समस्याओं को ध्यान में रखकर ये तय करना होगा कि आप 2 साल की डिग्री कर लेंगे तो प्राईमरी सेक्शन में आपकी बहाली होगी, जब आप बी.एड. करेंगे तो माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आप नौकरी करेंगे, आप एक साल का डिग्री प्राप्त करेंगे तो नर्सरी में आपकी बहाली होगी इसकी भी तो एक योजना होनी चाहिए। ताकि छात्र प्रेरित होकर नामांकन लें। आई.सी.टी. के द्वारा हमारा कौशल विकास होगा, अच्छे शिक्षक बनेंगे तो हमारी शिक्षा मे गुणात्मक सुधार होगा।

सेमिनार मे आये अतिथि वक्ता डॉ. डी. एन. सिंह अपने वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए।

डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी (Dean Faculty of Education, Aryabhat Knowledge University, Patna) ने सूचना एवं संचार तकनीकी विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। डॉ. त्रिपाठी ने बच्चों को संज्ञान में लेते हुए कुछ प्रश्नों को प्रतिभागियों के समक्ष रखा–बच्चों को हम क्यों ऐसा पढ़ाते हैं जैसा कि हम पढ़ाना चाहते हैं। ऐसा क्यों नही पढ़ाते

जैसा कि वे पढ़ना चाहते है? यह विचारणीय बिन्दु है। इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि शिक्षक को मार्गदर्शक होना चाहिए। शिक्षक को कक्षा में बच्चों के स्वतंत्र रूप से सोचने–विचारने के अवसर दिये जाने चाहिए।

डॉ. अरविन्द कुमार मिलन (D.D.E. L.N.M.U. Darbhanga) ने अपने वक्तव्य में ICT पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। आपने व्यवहारिक उदाहरणों द्वारा किसी समस्या को किस तरह हल किया जाए इसे बताया। इन्होंने कहा–शिक्षक जन्मजात नहीं होते हैं उन्हें बनाया जाता है (Teachers' are not born they are made)। मैं अपने संस्थान को लेता हूँ जो एशिया का सबसे बड़ा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान माना जाता है और वहां से प्रतिवर्ष 200 छात्र प्रशिक्षण लेकर बाहर निकलते हैं 75 वर्षो से वह संस्था काम कर रही है। आज तक लगभग 15000 शिक्षक वहां से निकल चुके हैं, उस 15000 शिक्षकों के द्वारा जो देश की शिक्षा व्यवस्था है उसमें आमूलचूल परिवर्तन हो गया होता लेकिन आज भी हम जब शिक्षा की बात करते है तो शुरूआत यही से होती है, शिक्षक प्रशिक्षण को लेकर होती है। जब हम Role of ICT in Teaching Learning Skills की बात करते हैं तो जो stand Prof. Lalit kumar जी ने लिया था मैं उसका समर्थन करता हूँ। कोविड के काल में ICT एक तरह से जिस तरह का Intrest, जिस तरह की उपयोगिता Create किया है वह अद्वितीय है लेकिन मेरा यह मानना है कि कोविड काल में जो ICT प्रयोग हुआ है वह फैशन के रूप हुआ था या आवश्यकता के रूप में हुआ। इसमे सभी को विचार करने की आवश्यकता है चाहे वह फैशन था या आवश्यकता थी। जब हम डिजिटल age की बात करते हैं तो हम सामान्यतः संत जोसेफ्स जैसे स्कूल को देखकर कहते है कि यहां पर Digital Board, Smart Board, Interactive Board हैं और हम सामान्यीकरण कर लेते है इस चीज को भूल जाते है कि आज भी इस देश में 70% बच्चे सरकारी विद्यालय में पढ़ते है और मात्र 30% बच्चे निजी विद्यालय में पढ़ते है। जहां पर ICT की सुविधा उपलब्ध है। साधारण सा शोध का नियम है कि आप 70% से सामान्यीकरण कर सकते है लेकिन 30% से सामान्यीकरण नही कर सकते हैं। एक डाटा प्रो. आशीष कुमार श्रीवास्तव ने दिया था 'ASMA' का बेसिकली वह डाटा ये नहीं दिखाता है कि इस देश में कितना बड़ा मारकेट ICT का हैं, बल्कि वह डाटा यह भी दिखाता हैं कि इस देश में कितना बड़ा डिजिटल डिवाइस है। इन सारी चीजों को हम नजर अंदाज नही कर सकते है। जब हम ICT की उपयोगिता की बात करते हैं तो लगता है कि हम बहुत सारी चीजों को नजर अंदाज करके सामान्यीकरण कर लेते है और हम कह देते है कि जमाना इसी का है एक कोटेशन है स्वामी विवेकानंद का, वो कहते है कि धर्म जानवर को इंसान बनाता है और इंसान को भगवान बनाता है, मैं इसको शिक्षा से Replace करता हूँ, शिक्षा जानवर को इंसान बनाता है और इंसान को बुद्विमान बनाता है, ये बुद्विमत्ता ICT के throw नहीं आ सकता है। ये बुद्विमत्ता शिक्षक के द्वारा ही आ सकती है चाहे ICT के किसी स्तर पर हम चले जाएँ, आजकल हम Education 4.0 की बात करते है। इस Education 4.0 का पुरा Concept Educational Technology पर आधारित है लेकिन जब पढ़ने लिखने की बात होती है, बच्चों में भावात्मक विकास की बात होती है तो ICT नहीं कर सकता है सिर्फ ICT के माध्यम से हम जैसा नागरिक बनाना चाहते है वह संभव नही है, हमलोग कक्षा मे पढ़ाने के लिए जाते हैं तो हमारा जो मुख्य फोकस होता है वह विषय से संबंधित होता है और पुरी की पुरी शिक्षा व्यवस्था Content Centred है। हम बच्चों को पढ़ाने के लिए नहीं जाते हैं हमको गणित पढ़ाना है इसीलिए जाते हैं। बच्चा हमारे लिए प्रमुख होना चाहिए और एक कहावत है कि वह किताब है जो हमें शब्दशः पढ़ना पड़ेगा, दूर्भाग्य से शिक्षक किताब शब्दशः पढ़ के जाते हैं, बच्चों को नजर अंदाज करते हैं। अगर आप पढ़ाने के लिए जाते है Educational Psychology, Educational Technology ये सारी चीजें कक्षा में पढ़ाने के लिए जाते हैं लेकिन इन सबको पढ़ाने से और Real Sense में बहुत अन्तर है इस समय मुझे गीत का एक पंक्ति याद आ रहा हैं–'किताबें बहुत सी पढ़ी होगी तुमने, कभी कोई चेहरा भी तुमने पढ़ा है' हर शिक्षक को बच्चों का चेहरा पढ़ने की आवश्यकता है ना कि किताब को। बल्कि मैं कहता हूँ कि एक कदम और आगें जाने की आवश्यकता है 'चेहरा क्या देखते हो दिल में उतरकर देखों ना'। आपको बच्चों के दिल में उतरना पड़ेगा, बच्चों को समझना पड़ेगा और बच्चों को जानना पड़ेगा। जबतक आप बच्चें को नहीं जानेंगे, नहीं समझेंगे आप चाहे कितना भी ICT का उपयोग कर ले जो पढ़ाई है वह आसान नहीं हो सकती।

सेमिनार मे अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. अरविन्द कुमार मिलन

प्रो.अवध किशोर राय (Former Vice- Chancellor, B.N.M.U. Madhepura & Tilka Manjhi Bhagalpur University) ने अध्यक्षीय उद्बोधन में विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि अभी आपने जीन चीजों को सुना वो पब्लिक डोमेन है, आजादी के बाद हमारी आवश्यकता के अनुसार हमारी सरकार ने शिक्षा नीति को बनाया। एक बात तो तय है कि NEP 2020 के कारण 2030 तक सारे बी.एड. कॉलेज के पढ़ाई के मॉडल में भी परिवर्तन आएगा। इन्होंने 5+3+3+4 को विस्तार से बताया। प्रशिक्षुओं को सूचना के साथ–साथ तकनीकी की भी जानकारी दें। छात्रों को नई तकनीकियों से वाकिफ कराना है। कॉलेज एवं लैब में जो सूधार होनी चाहिए उसकी भी चर्चा NEP 2020 में की गई है, भागलपुर जिला में मेरे समय में दोहे के रूप में गणित को सीखया जाता था यह बहुत आसान विधि थी। गणित का कैलकूलेशन जितनी अच्छी तरह से मशीन नहीं कर पाएगी उतनी तेजी से पहले इस विधि से पढ़ाया जाता था। सरकार भी चाहती है कि जो शिक्षक बनने जा रहे है उन्हें भी इन चीजों से कौशल युक्त होना चाहिए। शिक्षक का भी यही काम है कि आई.सी.टी. के माध्यम से आप कैसे बच्चों के दिमाग में ये बातें डाल सकते हैं। जब क्राईसिस आता है तो तकनीकी को विकासित करना ही पड़ता है, इससे बच्चों की Efficiency, Proficiency बढ़ेगी और सोचने की क्षमता भी बढ़ेगी। यह नीति कम से कम समय में बच्चों को अधिक से अधिक ज्ञान देने की कोशिश करेगी तो उस तकनीकी को हम क्यों छोड़े? आगे भी इस तरह के सेमिनार में जरूर भाग ले आपका ज्ञानवर्धन होगा। उद्वधाटन सत्र का मंच संचालन निधि सिंह (बी.एड. 2022–24) एवं रंजीत परासर (पूर्व छात्र बी.एड. 2019–21) ने अपने करिशमाई भाव–भंगिमा के साथ किया।

सत्र के अंत में अध्यक्षता कर रहे विषय विशेषज्ञ प्रो. अवध किशोर राय

Award Session :-

मुख्य अतिथि **प्रो. अवध किशोर राय** के द्वारा बी.एड. (सत्र : 2019–21) की छात्रा **सौम्या वर्मा** को 'Student of the Year award' से एवं **प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर** के द्वारा द्वारा बी.एड. (सत्र : 2020–22) के छात्र **रजनीश कुमार** को 'Student of the Year award' से पुरस्कृत किया गया। इसके बाद संत जोसेफ्स महाविद्यालय कि प्राचार्या डॉ. सुप्रिया कुमारी के द्वारा 'अल हसन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय' के प्राचार्य 'मोहम्मद अब्दुल रहमान' जी को मेमेंटो से सम्माानित किया गया एवं बीबी फातिमा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के सचिव 'मोहम्मद अंजुम अशरफ' जी को मेमेंटो से सम्मानित किया गया। श्री प्रशांत सागर सर के द्वारा बीबी फातिमा महाविद्यालय के प्राचार्य 'डॉ. प्रेम प्रकाश सिंह' को समानित किया गया एवं संत पॉल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की प्राचार्या 'डॉ. रॉली द्विवेदी' को सम्मानित किया, आर. एल. महतो इंस्टीच्यूट ऑफ एजुकेशन समस्तीपुर के प्राचार्य 'डॉ. धर्मेन्द्र कुमार', महात्मा गांधी बी.एड. कॉलेज के सचिव 'इंजीनियर दीपक सिंह' एवं डॉ. अमित कुमार 'प्राचार्य महात्मा गांधी बी. एड. कॉलेज लखीसराय' को सम्मानित किया गया।

Song on St. Joseph's MSVM Teachers Training College- By **Anuradha Kumari**

अनुराधा कुमारी (**Asst. Prof., St. Joseph's MSVM TTC**) स्वनिर्मित गीत प्रस्तुत करते हुए।

In the closing session**, Dr. Priyanka Kishore** thanked all the guests, Subject Experts and Participants. I want to thank Anuradha ma'am for such a melodious song.I know time is very less, it's already so I want to start with Prof.ashishshrivastav sir ,it was very enlightening for all of us to have you here .I will never forget this statement "Technology is not a choice, now it's compulsion" and we all agree with this and sir you talked about the thoughts of Swami Vivekananda, Johan Dewey and UGC Guidelines. You have mentioned very important documents also although.I did read NEP 2020.The things that you have mentioned in fact about national curriculum Framework for teacher education also is really very good. We all should also read these documents about technological, pedagogical, assessment, content Knowledge 'ASMA'. Thank you, sir and Our guest speaker Prof. Gopal Krishna Thakur sir, we are really enlightening by listening you because you have enlightening about the role of teacher to inform, to influence, to inspire. These highlighted specific points will stay with us.Thank you very much sir. And Prof. Lalit Kumar sir, you have explained very meaningful about the information and communication technology, the role of teacher. The relationship of head, heart and hand, that was really very good. And Prof. Rama ma'am, you have started with the reluctance that many of us had when we started using technology but with time we actually adopted ourselves with all the struggle and things and we are learning from our new generation that very true. And Prof. Vinay sir, thank you very much for talking with us in mathili and giving us with a real-life example, you are making us feel to realise the importance of making lesson plan, that was really good for all of us. And Dr. D. N. Singh sir, you actually showed us the ground reality of our education system. Thank you very much for that. And Dr. Masood Aalam khan sir, you actually gave us the integration of time, money, labour and technology inside a classroom during classroom transaction. And at the end, I would like to thank our Chief guest sir he actually acted as a guardian, taken all the views and summed up very beautifully, like a guardian he accepts our all the

thoughts and views, and he made us realise that we all have our differences but at the end. We all want together by this national seminar is the development of the education system in Bihar, an India. Thank you very much everyone. Thank you our Chairman sir Mr Anil Kumar Sinha sir and principal Dr. Supriya ma'am, for giving us this opportunity as national seminar, Thank you very much.Thank you everyone. And obviously last special thanks of Seminar all committee, school teachers, Midea, Non teaching Staff and B.Ed., D.El.Ed. Students. You people are the heart of the national seminar. Without you will us never albel to successful complete of our national seminar.

Dr. Priynaka Kishore giving vote of thanks in the Inaurgural Session

Technical Session-1 (18.03.2023, Time: 02:30 PM – 04:30 PM):-

Topic :- i. The Future of ICT based learning/ Teaching
ii. Updated Tool of ICT For Classroom teaching and innovative Practices based on ICT
iii. Precautions to Follow while using ICT In teaching .

अध्यक्ष : प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर
सह अध्यक्ष : प्रो. विनय कुमार चौधरी
विषय विशेषज्ञ : डॉ. मसूद आलम खान
समन्वयक : डॉ. प्रियंका किशोर
सह समन्वयक : अंगद कुमार सिंह
तकनीकी सहायक : गौरव कुमार, राकेश कुमार
मंच संचालिका : निधि सिंह

प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो. विनय कुमार चौधरी (Former H.O.D., Education Department L.N.M.U. Darbhanga & M.L.A. Benipur, Darbhanga) ने आई.सी.टी. के आधार पर कक्षा शिक्षण और अभिनव अभ्यास के लिए आई.सी.टी के अद्यतन उपकरण से छात्रों को अपडेट होने के लिए कहा। इस संबंध में विस्तारपूर्वक चर्चा अपनी क्षेत्रीय भाषा मैथिली में की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर बात चईल रहल अईछ, अईमें स्थानीय भाषाक प्रमोट कैएल गेल अईछ। ई क्षेत्र में शिक्षाक अलख जगाब में महत्वपूर्ण भूमिका श्री अनिल बाबू निभेलईथ हन। शिक्षाक ई क्षेत्र में केऊ जिम्मेदार छईथ त ओ छईथ हमर गुरूदेव डॉ. डी. एन सिंह सर। अई क्षेत्रक गंगोत्री शिक्षा जगत में डॉ. जाकिर हुसैन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय अईछ। आगा प्रो. चौधरी कहलईथ जे लेसन प्लानक पहिल अब्जेक्ट रूटिन होईत अईछ। अधिकांश विद्यालय में रूटिन नई रहईत अईछ। त केनाक विद्यार्थी बूझत जे काईल कि पढ़ाई हेतई। शिक्षक बिना रूटिनक पाठयोजना कोनाक बनौउता। अगर हम दूरस्थ शिक्षाक बात करी त रेगूलर कोर्स में ऊ विश्वविद्यालय डिग्री द सकईत अईछ जकरा नैक एक्रीडिटेशन स 'C' ग्रेड सेहो छई मुदा दूरस्थ शिक्षा मे ओहे डिग्रीक मान्यता रहत

जकरा 'A'$^{+}$ अईछ। ई बात सब जानईत छी जे रेगुलर में क्रीम विद्यार्थी जईत अईछ मुदा डिस्टेश में डिग्रीक बढाव लेल जईत छी। जत ज्ञान के उपार्जन हेतई ओत 'C' ग्रेडक महत्व अईछ लेकिन जतअ डिग्री के इनहांसमेन्ट हेतई ओत 'A'$^{+}$ के बात होईत अईछ। यानि की ज्ञान लेल 'C' ग्रेड आ डिग्री लेल 'A'$^{+}$ के जरूरी अईछ। नीति निर्धारक व्यक्ति ऐहन–ऐहन नीति निर्धारित करता। सुधार हमरा अपने सं शुरू करै परत। आब विद्यार्थी किताबक बजाय गेस पेपर सं पढ़ाई में रूचि देखाबईत छईथ ताहि लेल किताबक दुकान कम भेल जाईत अईछ। आहां सब मूल पोथी पढ़ूँ, आई.सी.टी. के सहायता लिअ आगा बढ़ूँ।

प्रो. विनय कुमार चौधरी (Former H.O.D., Education Department L.N.M.U. Darbhanga) अपने वक्तव्य देते हुए।

डॉ. मसूद आलम खान (H.O.D., Department of Education, L.N.M.U. Darbhanga) ने शिक्षण में आई.सी. टी. का उपयोग करते समय पालन की जानी वाली सावधानियों से प्रशिक्षुओं को अवगत कराया। इन्होंने कहा कि जहां तक मैंने आई.सी.टी. को पढ़ा है, समझा है, कि शिक्षक एक महत्वपूर्ण अंग है शिक्षक के पास सूचनायें होती हैं जिन सूचनाओं का वह संम्प्रेषण करता है, उन संम्प्रेषण के लिए तकनीकी का प्रयोग होता है। तकनीकी को आसान शब्दों में कहा जाए तो Minimum Time, Minimun Labour, Minimum Money का इस्तेमाल करके ज्यादा से ज्यादा हमें प्रोडक्टविटी मिले यही हमारे लिए तकनीकी है। एक शिक्षक कक्षा में जाता है और अपनी बातों को छात्रों तक पहुचता है और उसके अन्दर Modification of behavior करता है तो वही उसकी तकनीकी कहलाती है। जहां तक तकनीकी का सवाल है मैनें एक पाठ एम.एड. कोर्स में पढ़ा था वो 'शिक्षा का भविष्य शास्त्र' था इसमें कहा गया कि एक दिन ऐसा आयेगा कि शिक्षक नाम का प्राणी विलुप्त हो जाएगा, उसकी जगह तकनीकी आ जाएगा और वही शिक्षक आगे बढ़ जाएगा जिनको तकनीकी का ज्ञान होगा, वैसे शिक्षक जिनके पास तकनीकी ज्ञान नहीं होगा वैसे शिक्षक विलुप्त के कगार पर होंगे और वे शिक्षक कहानी और किस्सों में पढ़े जाएंगे। हम सभी शिक्षकगण विलुप्त ना हो जाए इसके लिए तकनीकी का हम ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें, ज्यादा से ज्यादा हम उसमें कौशल प्राप्त करें, उसको जानें।

डॉ. मसूद आलम खान (H.O.D., Department of Education, L.N.M.U. Darbhanga) अपने वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए।

प्रथम तकनीकी सत्र के अंत में इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे विषय विशेषज्ञ **प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर** (Professor & Dean, School of Education, Dean, School of Management, Head, Department of psychology, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi University Wardha, Maharastra) ने आई. सी.टी. आधारित शिक्षा एवं शिक्षण का भविष्य विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे बताया कि सूचनाओं को ज्ञान में रूपांतरित करने का कार्य शिक्षक का होता है। सूचनायें तो Open Resources में अनंत प्रकार की है स्वयं भी सीखें और दूसरों को भी सीखाएँ। इन्होंने महाराष्ट्र के संदीप गुंड नामक शिक्षक का उदाहरण देकर समझाया कि उन्होंने कैसे शिक्षा जगत में उस क्षेत्र के लोगों में रूचि उत्पन्न की। ये कैंब्रिज विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड से शिक्षा प्राप्त नहीं की थी लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में उनकी ललक अलग थी।

Teaching Learning Skills की कोई एक परिभाषा नहीं है, जितने भी कौशल है जो आपके छात्रों के अधिगम अनुभव स्तर को समृद्ध कर सकें, जो उनकों एक सम्पूर्ण मानव बना सकें। छात्र डिजिटल डिक्टेटरशीप के अधीन ना होये। प्रो. ठाकुर ने एक और ज्वलंत उदाहरण दिया रशिया के उस 21 वर्ष के बालक का, जिसने बैठे–बैठे 'ब्लूवेल' नाम का सॉफ्टवेयर डेवलव कर लिया, इसमें एक गेमिंग एप्लीकेशन था जिसने पूरे विश्व में तहलका मचा दिया। जितने किशोर वर्ग के बच्चें थे पहले स्टेप बाई स्टेप बढ़ते जाते थे बाद में जब हारते थे तो उनका दिमाग इतना उस गेम एप्लीकेशन के अधीन हो जाता था कि बच्चे आत्महत्या कर लेते थे। वो हार को बर्दाशत नहीं कर पाते थे। इस पर हम शिक्षकों को विचार करने की आवश्यकता है।

तकनीकी सत्र मे आए हुए **अध्यक्ष प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर** अपने वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए।

उपर्युक्त टॉपिक पर सभी प्रशिक्षुओं एवं शोधार्थियों ने अपने–अपने आलेखों को प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन **अनुराधा कुमारी** के द्वारा दिया गया, इसके साथ ही प्रथम दिन के तकनीकी सत्र की समापन की घोषणा कि गई।

19.03.2023 (09:30 AM – 11:00AM)

दो–दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन Plenary Session का शुभारंभ सोनी एंड ग्रुप (मन की वीणा से गुंजीत ध्वनि मंगलम्) के द्वारा स्वागत गीत के साथ किया गया।

डॉ. सुप्रिया कुमारी (प्राचार्या, संत जोसेफ्स मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय) के द्वारा स्वागत वक्तव्य के साथ इस सत्र का शुभारंभ हुआ। इन्होंने अपने स्वागत वक्तव्य में आमंत्रित अतिथियों के शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण योगदानों पर प्रकाश डालते हुए सेमिनार में अपने अनुभवों को सभी के समक्ष रखा।

प्राचार्या डॉ० सुप्रिया कुमारी सेमिनार के दूसरे दिन स्वागत भाषण देते हुए

Prof. Subhash Chandra Roy (Former Head and Dean, North East Regional Institute of Education, N.C.E.R.T. Shilong Member ERC- NCTE) said it is not so, easy to for any Educational institute, to run it and that to heared this school is running nearly- nearly. This institution as belong to effect what is this country. Whole world has a parallel orgnasation. The organization I am working with it is N.C.E.R.T. It is not university, there are thousands–thousands university in this country. NCERT is only one and we are they final Authority the field of education. And this entire business the teacher education is meant for teacher eduction. The state Bihar has nearly 350 teacher institution. They are running programmes nearly 38000 students are getting enrolled for here. I don't to avoide people do know to understand this connection between what does in to the teacher eduction institution and what is happening in this school. If you look at the 'ARSA' (Aviation Safety Reporting System) report, which has generated by sum NGO's with the help of ministry of education. Government of India as well as NCERT also wing or some achievement Some survey report time to time. There are many other indepent report for school education. See this Scenario in the Bihar, You find that school education in bihar. It is at the plate. It is that the basic level. This is the hard reality and every year all these institutions they are adding 2 lakhs and Lakhs teachers to the state and this teachers are getting a absorbed in the school system here. What is the teacher education are doing. When we see this national education policy what we call it has game changer in this century. The vision documents are not the vision document, it has one in to implementation and more than 2years. It has Born in few years they are many iniciatives so, we can not say that is theoretical documents it is under Implementation. Teacher education institutions it has taken some Promonate pronounce space in this documents policy is stands. So, Kothari Commission mention, 1968 Policy also mentions, Chatopadhayay Commission also mention about the teacher education. Even new generation are smart kids. His or her having high IQ Level are more smart, the Electronics gadget. You understand the value of this digital world and digital competence. The power of electronic gadget. The Brain proces is very easly, much faster, much easly, much teach, then the text . so, this digital world it provide us facts, audio, video, etc. That is more convenion to learn, aboserval and understand. This gadget are very much available now. Electronic gadget, how we use that

is impotant interactive use of these resources . so , Resource based approcah to interactive based approach. This is current required. When we talk ICT based education or ICT related education. That is impotant. Integration of ICT with Pedagogical process, with the curricular process, with the assessment process so, many thing that will help there but the curricular activity, the assessment activity, the pedagogical activity, the integration of ICT there in how natural integration that is the chanllange for the teacher educator because teacher educator is not founded that is the direct consession betbeen the teacher eduction classrooms , B.Ed. Classrooms and the school classrooms. The way treat here, the way function here, the way part from here, they will performe here. The student will performe same way there in the school. Pedagogy at become a compulsory elements of higher education. So, no Mathematics professor, no Physics professor, No language professor, can say no I have nothing to do pedagogy, I have no content, no my subject that's enough. No they are wrong and they have to be modify. The advantage, the Value, the waghtage there in ICT, Specially in education Knowledge gaining process, knowledge turning process, knowledge application process the development of higher order thinking skills, the matacongnitive skills, the Critical thinking skills, collaboration in analytical thinking, the creativity, the Innovation, there like the integration of ICT with education and the process.

Prof. Subhash Chandra Roy giving a speech in the seminar

Dr. Vikramjeet Singh (Associate professor, St. Xavier's College of Education, Patna) Many a times, we think that this particular work we are listening it and hearing about it for so long, for around, after year 2000. We are quite habitual of this word and at least after the experience of pandemic. so it has given us the experience that how technology can be a saviour. Those person, those were very much not in interest to use technology how it become a saviour when we have experienced the corona period.

Now as the situation demand and whatever the time permit, I will just go to the topic, specific topic of 'information and communication technology' and how it is going to a work as a warrior, as a tool to implement the national education policy goals. So whenever we are talking about national policy. Everyone is talking about national education policy now a days and we have seen that the goals of national education policy are very much ambitious. Many persons are talking about, how they can be achieve or not we are planned it to a very high level but as for we experience with technology that I have. I can say that technology is the only tool that can helps us to realise the dream of whatever the things which have been mention in national education policy can be achieve. We take every, whatever suggestions are mentioned in national education policy, it takes about interdisciplinary education, it talks about different choices to be given to the students. Just take the example of this particular thing,

that difference subject choices will be given to the students and it starting from the school stage not talking about higher education only. So if in the school, we facing the situation, teachers are not in appropriate number, still they are very few in number or not the appropriate student teachers ratio are not been maintain, at least in the government school. It is not there, it is missing. So technology can save us. So if student is saying that at particular after class 8, the student now they have different choices. So if particular student, if he wants to learn Sanskrit, then he wants to learn mathematics, then he wants to learn computer science and that particular teacher is not there, the technology can be the saviour. The National platform like 'SWAYAM', Prabha channel, is also there where the Government of India is offering different courses. It is for the school stage, also PM e- Vidya program is there where all the school different subject, you can get the topic or different lectures or video or for this particular higher education specifically you can get the topic 'SWAYAM'. This is one example, we can see that technology can be given other. I have talking about flexibility in examination, in assessment it has been mention in the national education policy that assessment should be done using technology and you have got the experience that what remarkable thing NTA is doing. Never imagine that examination can be happening for so much mass number of students, mass candidate and for different particular choices of subjects and on different dates, flexibility of date.

Dr. Vikramjeet Singh giving a speech in the seminar

डॉ. मुश्ताक अहमद (Registrar, L.N.M.U. Darbhanga) ने कहा कि यह विषय समसामायिक है, उर्दू भाषा का एक मशहूर दार्शनिक ने कहा था कि 'चलो तुम उधर को हवा हो जिधर को' अर्थात जिस दिशा में हवा जा रही हो उस दिशा में चलना होगा। अगर आप ना चलेंगे तो आपकी अहमियत समाप्त हो जाएगी। जहां तक शिक्षाशास्त्र विषय का संबंध है उसमें नित्य नये परिवर्तन के साथ आपको नये आगंतुक छात्रों को नये ज्ञान से अवगत कराने की जिम्मेदारी है। अभी नई शिक्षा नीति की राष्ट्र के समाने जो चुनौती है वह सभी विभागों के साथ है लेकिन शिक्षा के साथ अत्यधिक है। इसीलिए सभी परिवर्तन की जननी शिक्षा है। हम किसी क्षेत्र में अगर परिवर्तन लाना चाहते हैं तो सबसे पहले शिक्षा में परिवर्तन लाना होगा। अभी चार–पांच रोज पहले दुनिया का सबसे छोटा देश फिनलैंड के दो एक्सपर्ट हमारे माननीय कुलपति प्रोफेसर सुरेन्द्र प्रताप सिंह से मिलने आये थे और दो घंटे तक विचार विमर्श भी करते रहे। कुलपति एस.पी. सिंह ने प्राचीन भारत से लेकर अब तक कि जो शिक्षा है उसके पद्धतियों पर बात चीत की अंत में फिनलैंड से आये दोनों सज्जनों ने कुलपति से अनुरोध किया कि आप फिनलैंड में आकर इसे बताईये। कुलपति ने उनसे पूछा आपके यहां जो शिक्षा में उतना परिवर्तन हुआ तो आपका संबंध किस क्षेत्र से है। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि वहां कही भी बी. एड. का कोर्स नहीं चलता और शिक्षक को तैयार करने के लिए बी.एड. या एम.एड. पास लोग नहीं जाते बल्कि विभिन्न क्षेत्र के लोग जाते है। जो फिनलैंड से दो व्यक्ति आयें थे उसमें एक

आर्किटेक्ट इंजीनियर था और दूसरा वैज्ञानिक था और वे दोनों फिनलैंड में शिक्षक तैयार करते थे। वे लोग आने वाले शिक्षक को इस तरह तैयार करना चाहते थे ताकि शिक्षक बनकर जब वह कक्षा मे जाएं तो उनके पास विभिन्न क्षेत्रों की जानकारियां हो। भारत के सामने ये चुनौती है और नई शिक्षा नीति में उसे फोकस किया गया है।

डॉ. मुश्ताक अहमद सेमिनार में वकतव्य देते हुए।

डॉ. रविकांत (Professor & Head, Department of Education, Central University of South Bihar) ने उद्बोधन में कहा कि जब टीचिंग लर्निंग प्रोसेस कि बात आती है तब शायद भारत की बात करें तो स्थितियां बिल्कुल विपरीत है। विकसित देश की तुलना में तो शायद हमें यह चितंन करना चाहिए, कि हम ICT का Exchange vs use करेंगे और आई.सी.टी. हमारी सहायक होगी, मास्टर नहीं। अभी कुलपति महादेय ने कहा कि शिक्षक एवं छात्र के बीच में आई.सी.टी.माध्यम है। N.E.P. 2020 के Documents जब आप पढ़ेंगे तब देखेंगे कि उसमे दो चीजों पर ज्यादा फोकस कर रहा है कभी–कभी ऐसा लगता है कि दो चीजों का संर्घष भी है एक तरफ वो पांरपरिक मूल्यों, पांरपरिक शिक्षा की बात करता है तो दूसरी तरफ आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की बात करता है, Integrative Knowledge जिसको हम बोलते हैं और जिस पर भारत सरकार ने दिल्ली में एक टीम बना रखा है। Integrative Knowledge को लेकर इन्होंने बड़े–बड़े प्रोजेक्ट भी दिये है। वे इस बात पर फोकस कर रहा है कि ऐसा ना हो कि आई.सी.टी. का उपयोग करते–करते हमारी सांस्कृतिक धरोहर समाप्त हो जाए। हमारे पास जो गुरू–शिष्य परंपरा है वे विश्व की बेहतरीन पंरपरा है लेकिन कही ऐसा ना हो कि ज्यादा तकनीक का उपयोग करना शुरू कर दे जिससे गुरू शिष्य परंपरा का क्षय हो जाए। मेरा बहुत दृढ़ विश्वास है कि आई.सी.टी. हमारी जरूरत से कही ज्यादा संवेदी है। आई.सी. टी. की जितनी भी टेक्नोलॉजी है वे बहुत ज्यादा संवेदी है, इन्द्रियां पांच है जो प्रकृति ने हमे दी उसकी कुछ सीमा भी है, मुझे दिखाई दे रहा है तो कुछ सीमा तक दिखाई देगा उसके बाद दिखाई नहीं देगा, लेकिन हमारे पास जो तकनीकी उपलब्ध है वे असीमित है। यही से बैठे–बैठे चाँद की सतह देख लेते है, हम खगोलशास्त्र में दूरबीन लगाकर नये–पुराने ग्रहों को ढूढ़ लेते है लेकिन इन सारी संवेदनाओं के बाद जो सबसे बड़ी महत्वपूर्ण बात है कि ये मशीन सांवेगिक नहीं है, ईमोशनल नहीं है Tools and techniques of ICT vs may be Sensetive hundred time more in comprision sense of human they are not a one Precent immotional. मशीन emotional नहीं है वे सिर्फ sensetive है हमलोग बेसिकली ICT का उपयोग क्यों करते हैं? Either use believing developing technocreate in our classroom or developing technosaving for weightage comeing process. इस चीज को आपको समझना पड़ेगा कि technocreate बनाना हमारा काम नहीं है वैसे भी बी.एड. और टीचर्स ट्रेनिंग की तकनीकी बनाना, तकनीकी को विकसित करना हमारा काम नहीं है अगर हम technocreate बनायेंगे तो हो सकता है कि हम एक बेहतररीन शिक्षक को खो देंगे क्योंकि वह संवेदना से रहित होगा। हमारा शिक्षक ऐसा हो कि जहां जरूरत पड़े, जितनी जरूरत पड़े तकनीकी का उपयोग कर ले जिससे उसकी और छात्र के बीच का तालमेल बना रहें।

डॉ रविकांत प्रतिभागियों के समझ प्रश्न रखते हुए।

डॉ. मनिषा रानी (Assistant Professor, School of Education, Mahatma Gandhi Central University, Motihari) ने Five Alphabate 'ABCDE' को बच्चों के समक्ष रखा। 'A' है Attention, इसमें कोई दो राय नहीं है अगर हम सैद्वांतिक रूप से देखें तो आई.सी.टी. का उपयोग या शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में उसकी जो उपादेयता है वह बहुत ही प्रभावी है लेकिन जब हम व्यवहारिक तौर पर आते हैं और अपना खुद का आत्म अवलोकन करते हैं तो हम पाते है कि अभी भी आई.सी.टी. में कुछ न कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां हम खुद को अपडेट नहीं पाते है। बहुत सी चीजें ऐसी हैं जो हमे सीखना हैं, समझना हैं और खुद को अपडेट करना है। किसी भी व्यक्ति का जो व्यक्तित्व होता है उसपे सभी गुणों का रिफलेक्शन होता है चाहे वह Cognitive domain, Emotional domain, Social domain, Moral domain, Stastital domain हो लेकिन जब हम आई.सी.टी की बात करते है तो खुद को हम एक संज्ञानात्मक पक्ष तक परिसिमित कर देते है। कोई भी चीज हम सीख रहे हैं या कर रहे हैं तो हमे उसमें शतप्रतिशत ध्यान देना चाहिए। जब हम B कि बात करते है तो 'B' है Blended Mode. It is Combination of Synchronous Learning. यह वास्तविक संप्रेषण है जहां हम Recorded Mode में देखते है। Blended Mode को हम Hybrid Mode of Taching Learning भी कहते है जो कक्षा–कक्ष की अवधारणा है, जो हमारी परंपरांगत कक्षा है, जो आई.सी.टी. हैं, अगर हम दोनों को मिश्रित करें तो हमारा अस्तित्व है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 Holistic Development की बात करते हैं तो उसमें शायद उस नीति का सपना हम साकार कर पाएंगे। C-Stand for skill of the 21st Century जहां ये चार सी. है Critical Thinking, Creativity, Communication, Collaboration जिसकी बातें रविंकात सर ने भी की हैं। D-Stannd करता है Diversity, ये Reflecte करता है जो Differences हैं हमारे कक्षा–कक्ष में या चीजों में, हमें उन Differences को पहचानना होगा। अपने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आगे बढ़ाना होगा। जो Constructivism के Five 'E' हैं अगर हम इस परिप्रेक्ष्य मे आई.सी.टी. की भूमिका की बात कर रहे है तो Five 'E' का कॉनसेप्ट इस प्रकार से है, Engage, Explore, Elaborate, Explain and Evaluate जहां हर पक्ष में हम आई.सी.टी. को लाये साथ ही साथ अपनी दूसरी पक्षों को समाहित करें तो हम सर्वांगिण विकास की ओर जाएगें जो हमारे learning Outcome को Reflecte करेगा, Perception को हम कैसे Sence out, Interpret करते हैं कैसे मिनिंग देते है ये बहुत महत्वपूर्ण है। Becouse perception lead concept formation क्योंकि हम जैसे चीजों को Sence out करेंगे, Interpret करेंगे, उन्हें मिनिंग देंगे तो कही न कही हमारी अवधारण वैसी ही बनेगी। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हम Active Teaching Learning Concept की बात करते हैं तो ये Precious वाला Component बहुत ही Essential हो जाता है ताकि जिस लर्निंग आउटकम की बात पॉलिसी करती है उस चीज को हम Fulfil कर पाये। स्वामी विवेकानंद के अनुसार Education is Manifestation of Perfection which already exists with in Individual. मनुष्य के अन्दर ही सारी चीजें निहित होती है बस उसे सही दिशा की देने की जरूरत है। आई.सी.टी. को हम Organised or Systematic way में उपयोग कर शिक्षण को प्रभावी बना सकते है। हम जो पढतें हैं उसको वास्तविक जीवन से जोड़ें नहीं तो

Every thing just like information for us, but when will able to connect those thing, thus information to our daily life cititution then he become knowledge. इस बात पर हमें ध्यान देना है। अभी हमारे पास सूचनायें बहुत है, बहुत चीजें तुरंत ही Rapidly आ जाती है लेकिन हमें ये पहचानना होगा कि उसमें से कौन Relivent है, कौन Appropriate है और accordingly हमें Follow करना है। जो विकास की प्रक्रिया है वह हमारे इसी विवेक पर निर्भर करता है, हमें कोशिश करनी है चीजों को हम समझें और उसके अनुसार कार्य करें। आई.सी.टी. Isolation और abstraction के गैप को मिनिमाईज करता है तो कहीं न कहीं दूसरी ओर Isolation और abstraction को भी बढ़ाता है

डॉ मनिषा रानी विषय पर व्याख्यान देते हुए।

डॉ. राकेश कुमार (Former Principal CTE, Bhagalpur & Dean Tilaka Manjhi Bhagalpur University) ने कहा कि विवेकानंद की उक्ति है कि यदि आप कोई कार्य कर रहे हो, यदि आप सफल होते हैं तो आप विकास किजिए, यदि आप असफल होते हैं तो उन असफलताओं के कारणों को जानने की कोशिश करिए। आई.सी.टी. एक ऐसा अवसर है जिसने शिक्षा जगत में परिवर्तन ला दिया है। Nothing is Permanent in world कोई शाश्वत नहीं है, सिर्फ परिवर्तन के सिवा, परिवर्तन को स्वीकार करना चाहिए। Four Pillors of Learning Principle – learning to know, learning to do, learning to be and learning to live together. Learning to live together के लिए pandemic में आई.सी. टी. ने बहुत ही अच्छा अवसर दिया है जिससे हम दूर रहते हुए भी एक दूसरे को जागृत करते रहते हैं, यह आई.सी. टी. हमारे ज्ञान को Zero distance पर लाकर खड़ा कर दिया है। विश्व के किसी भी चीज की सूचना आप घर बैठे ही ले सकते है। इन अवसरों को उपयोग करने की आवश्यकता है। लर्निंग आउटकम का जो ह्रास हो रहा है उसे समृद्ध करने की कोशिश कीजिए। इन्होंने सेमिनार की सफल आयोजन की शुभकामानाएं भी दी।

डॉ. राकेश कुमार (Former Principal CTE, Bhagalpur & Dean Tilaka Manjhi Bhagalpur University) सेमिनार में संबोधन करते हुए।

डॉ. एम.डी. फैज अहमद (Principal of M.A.N.U.U. C.T.E. Darbhanga) ने कहा जब मैं यहां के पुस्तकालय गया तो वहां काफी लेटेस्ट पुस्तकें थी और उसमें वो कमिशन की रिपोर्ट भी थी, जो अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा तथा जिसका एक

हिस्सा Four Pillar of Education हैं। विद्यालय, महाविद्यालय खोलना अलग बात है लेकिन शिक्षा को मिशन के रूप में लेना और पुस्तकालय में पुस्तकों का एक अच्छा Collection करना एक अलग बात है। मैं दो प्रश्नों के साथ अपनी बातों को रखता हूँ 1694–66 कोठारी कमिशन का रिपोर्ट एजुकेशन एण्ड नेशनल डेवलपमेंट का था यानि इसका संबंध शिक्षा से था और यकीनी तौर पर उसका जो कर्णधार है, जो सेन्टर प्वाइंट है, वह शिक्षक और छात्र है। छात्र के लिए उसने बहुत खूबसूरत सा शब्द उपयोग किया था, उसने कहा था There is an argent need to transforme our education system and relate it to the life, needs as aspiration is the student. बहुत जरूरत महसूस हो रही है कि हम शिक्षा व्यवस्था को परिवर्तित करें। हम बच्चों को जिदंगी से, उसकी जरूरत से, उसकी आवश्यकताओं से और उसकी आकाक्षाओं से जोड़ देना। ये 1966 की रिपोर्ट है आप अंदाजा लगा लीजिए कितने दिन हो गए अभी तक पुरी तरह से पूर्ण नहीं हो पाया है। Indian Education system could not success to prepare such a report which can fulfill the aspiration of the student. दूसरा इस प्रोफेशन में आने के बाद अक्सर यह महसूस किया कि छात्र का कक्षा–कक्ष में Presence Knowledge gain करना या Compulsion of the many regulation है। Time and again failt and I feel my self comfort the most of the time there is compulsion before the student attend the class. It is not the availity of teacher to attract the class. ये कुछ ऐसी चीजें है ऐसी हालात में दुनिया बदल रही है, शिक्षक को अपने existacne बनाये रखना है, Changing Cenario के साथ एडजेस्ट करना जरूरी है उसके लिए यकीनी तौर पर जो अद्यतन चीजें है चाहे वह शिक्षा की हो, Instrument की हो, pedagogy की हो, उसको एडॉप्ट करना पड़ता है, Technology is there and that for supportive system that will assist it. हम इसको छोड़ कर भी नहीं जा सकते, मौजूदा वक्त में वह हमारी जिदंगी की एक जरूरत है।

डॉ.एम.डी.फैज अहमद सेमिनार को संबोधित करते हुए।

आगे डॉ फैज ने कहा कि अब सवाल है कि शिक्षा में जो तकनीकी है यह assist करने के साथ–साथ एक पार्ट हो गया है। हम पाठ्यक्रम बनाते है, उसको समाहित रखते है। That is not the Existing part rather than that is part of curriculum. Now technology it self become a part of teaching. Many questions is there. मूल्यांकन में हम तकनीकी का उपयोग कैसे करते हैं, अभी कोरोना के समय में हमने परीक्षा लिया, बहुत सी विश्वविद्यालय ने बी.एड. की डिग्री को मानने से मना कर दिया। There where many challagage was there. Indian education system कि बहुत सारी चीजों को देखना होगा, Assessment Process, Examination Process, Evaluation Process में तकनीकी कहां तक सफल होगा, मूल्यांकन में Critical Thinking, Probulems Solving attitude है इसमें तकनीकी कितना और किस तरह से सफल होगा? जो हमारा Creativity हैं, Giefted Children, weak student का अवधारणा है उसमे हमारा मूल्यांकन तकनीकी कहां तक आगे जा सकते हैं। भारत सरकार ने बहुत कोशिश किया, 34 चैनल चलाते हैं इसी वजह से कि इसको बच्चे समझे और परीक्षा दे डिजिटल लाईब्रेरी, डिजिटल यूनिवर्सिटी की बात हो रही है, खड़गपूर में वहां भाषा को डिजिटलाईज्ड कर दिया गया हैं लेकिन हमें उसका कितना उपयोग करना है, कैसे उपयोग करना है इसकी जरूरत है। कितने प्रतिशत शिक्षक और छात्र ऐडिमिक उद्देश्य से आई.सी.टी. का उपयोग

करते है वे उपयोग कम और दूरउपयोग ज्यादा करते है। इसके अलावे एक Present of Mind, की बात हैं, Attitude, Temprament, Openess, Scintific thinking की बात हैं तो हमारे व्यवस्था में जहां इतनी तरह की समाज में Constant हैं, राजनीति हैं, जातिवाद है, कोरोना ने हमें कहीं न कहीं Scientific Temprament की तरफ बढ़ाया हैं। हमारा छात्रों से यह आग्रह है कि वो सिर्फ उपयोगकर्ता ना बने बल्कि कुछ नया करने की सोचें जिससे लोंगो का फायदा हो।

डॉ.गुलाम मोहम्मद अंसारी (Principal, Oriental College of Education SISO, Darbhanga, Bihar) ने अपने वक्तव्य में कहा कि एक चीज पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ पहले कोडक (Kodak) नाम की एक कम्पनी हुआ करती थी, जिसमें लाखों वर्कर काम करते थे आज इस कम्पनी का प्रोडक्ट बाजार में दिखाई नहीं देता है। ये कम्पनी कैमरा का रिल बनाती थी, वो कैमरा के रिल का उपयोग करने के पहले लोंगो को एक साथ खड़ा करता था तब फोटो खींचता था, ताकि उसका एक भी रिल बर्बाद ना हो। अभी मोबाईल से हम तुरंत कई फोटो खींच लेते हैं। आज कोडक कम्पनी का नाम शायद मिट गया क्योंकि उसने अपने अन्दर परिवर्तन नहीं लाया। समय की आवश्यकता के अनुसार अपने प्रोडक्ट में कोई परिवर्तन नहीं की जिसकी वजह से इस कम्पनी का नाम मिट गया। अगर हम शिक्षक समय के साथ, आवश्यकता के अनुसार, परिस्थिति के अनुसार, आई.सी.टी. का उपयोग नहीं करते हैं तो शायद हमारी स्थिति भी कोडक कम्पनी की जैसी हो जाएगी। उन्होंने आई.सी.टी. विषय पर विस्तार पूर्वक चर्चा की।

डॉ.गुलाम मोहम्मद अंसारी आई.सी.टी. विषय पर प्रतिभागियों से चर्चा करते हुए।

डॉ. सुजीत कुमार द्विवेदी (H.O.D., B.M.A. College, Baheri, Darbhanga) ने कहा औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता केवल ज्ञानर्जन की ही नहीं है शिक्षक अपने जीवन का अनुभव बताता है, मानवीय मूल्यों को देता है, वह सीखता है कि व्यवहार कैसे करना है। आई.सी.टी. के माध्यम से अध्ययन करने पर हम इस तरह के मानवीय गुण नहीं ले सकते है। हम मानवीय मूल्य खोते चले जाएंगे, हमारी सांस्कृति समाप्त होती चली जाएगी, तो हमारा सबकुछ खत्म हो जाएगा। पेनडमिंग काल में आई.सी.टी. हमारे लिए एक अवसर के रूप में था, यह हमें How to adjest सीखाता है। आपने सीखा कम और खोया ज्यादा, जब सबकुछ खो दिया तो ज्ञान रखकर भी हमने कुछ नहीं किया। आई.सी.टी. कितना भी मजबूत हो जाए लेकिन एक शिक्षक का, एक व्यक्ति का, एक अभिभावक का, एक छात्र का विकल्प नहीं हो सकता है। इसके नाकारात्मक पक्ष को हम छोड़कर सकारात्मक पक्ष को ले। बच्चों को समझाएं कि तकनीकी का प्रयोग कहां तक करना है, यह विकल्प मात्र नहीं है, हमारे शिक्षा को मजबूत करने का एक साधन जरूर है। हमारा ज्ञान बढ़ा सकती है, हमारे शिक्षण को रोचक बना सकती है।

डॉ.सुजीत कुमार द्विवेदी सेमिनार में वक्तव्य देते हुए।

प्रो.सुरेन्द्र प्रताप सिंह (Vice-Chancellor of L.N.M.U. Darbhanga) ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि इतने अच्छे विषय पर सेमिनार को आयोजित करने के लिए संस्था के सभी साथियों को जिनकी व्यवस्था में, जिनकी सोच में, ये विषय चूना गया और आज ये सेमिनार हो रहा है, उन सबको साधुवाद देता हूँ कि इस विषय पर आप सबका ज्ञान बढ़ेगा और आगे जाकर कुछ न कुछ और सोचने के लिए विवश होगें, क्योंकि यह विषय बहुत ही समसामायिक है, शिक्षा विषय कब से शुरू हुई, इसकी कितनी उम्र हैं, किसने पहले शुरू की और कहां तक ये जाएगा, ये ऐसे प्रश्न है जो व्यक्ति के जन्म के साथ ही शुरू हो जाते है, और उसके अंत तक साथ चलती है। बहुत से लोग है जिनकी समाप्ति के बाद भी चलता रहता है। शिक्षा में जो व्यवस्था है वे दो ही लोग हैं शिक्षक और छात्र, जो कुछ होता है इन दोनों के बीच में ही Transmit होता है और इन्हीं दोनों के बीच प्रारंभ और समाप्त होता है लेकिन Ultimate Benificiary जो बनाता है, वो पूरा समाज बनता है और राष्ट्र ही नहीं पूरा विश्व बनता है। ये कुछ ऐसी चीजें हैं जैसे–शिक्षक कैसे पढ़ाएगा, क्या पढाएगा, कितना पढ़ाएगा? ये बात रविन्द्रनाथ टैगोर जी बहुत पहले कह गए। एक उदाहरण के माध्यम से उन्होंने कहा कि आप चिराग जलाते है, उस चिराग से कितनी रोशनी होगी, कब तक वह चिराग जलेगा, कितने लोंगो को वह रोशनी देगा, यह निर्भर करेगा कि उसमें तेल कितना है जितना ज्यादा तेल होगा उतनी ही देर जलेगा। शिक्षक की तुलना उस दीये से की गई है।

कोई शिक्षक कितना पढ़ाएगा, कितना ज्ञान Transmit करेगा, आपको क्या बताएगा ये निर्भर करता है उस शिक्षक के स्वाध्याय की शक्ति कितनी है। अगर शिक्षक अध्ययनरत है, उसकी स्वाध्याय की ताकत ज्यादा है, तो इन बातों पर निर्भर करेगा। एक छोटी सी बात इसमें और जोड़ियेगा कि ये सारी तकनीकी उसी ईंधन के रूप में काम करेगी शिक्षक के लिए इसके अलावा कुछ नहीं। जो तकनीकी आपको सूचना दे सकती है, तकनीकी आपके ज्ञान को समृद्ध कर सकती है, लेकिन ये दोनों महत्वपूर्ण नहीं है। सूचना को कहीं से अर्जित कर सकते हैं, दोस्तों से पूछकर या कहीं और से ले सकते हैं। सूचना तो बहुत छोटी बात है आप याद करेंगे भारत में जब 'लाईब्रेरी साईंस' को जोड़ा गया तो सूचना विज्ञान के रूप में भी उसको लिया गया, केवल इसी के लिए और आप अगर अच्छी पुस्तकालय गए होंगे तो खासकर किसी विषय का अन्तर्राष्ट्रीय कोड होता है जैसे अर्थशास्त्र का अन्तर्राष्ट्रीय कोड 330 है, जितनी अर्थशास्त्र की किताबें आपको किसी पुस्तकालय में Physical Form में मिलेगी वो 330 में मिलेगी और 330 के अन्दर अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र क्या होगा, ग्रामीण अर्थशास्त्र क्या होगी, लेबर अर्थशास्त्र क्या होगा, Particular Economics क्या होगा, उनके अलग कोड, digitalised है। वो एक पुरी विज्ञान है पुस्तकालय विज्ञान को सूचना विज्ञान के रूप में लिया गया इसलिए उसकी सारी डिग्री उसी रूप में है। शिक्षक या विद्यार्थी को कभी कुछ खोजना होता था तो पुस्तकालय में जाना पड़ता था और अपनी चीजों को वहाँ खोजना पड़ता था, उसी से वह अपना नोट तैयार करता था और deliver करता था। आज इसी सूचना तकनीकी ने उसको digitalised कर दिया, इतना rich कर दिया कि अब तो यहाँ तक 'Artificial Intellegence' (Ai) का काम हो गया है कि एक कक्षा में 50 छात्र हैं और एक Essay लिखना है तो 50 के लिए 50 essay देगा, अब Artificial Intellegence 'AI' इतना विकसित हो गया है। मजबूरी यह है कि Intellectual Property Right (IPR) बनाना पड़ा। पुस्तकालय को Information and Library Network Centre (INFLIBNET) से जोड़ा गया जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के संगठन से संबधित है। JAVA (Just Another

Virtual Accelerator) को भी बनाया गया, शोध चक्र को भी बनाया गया, तमाम सारी तकनीकी उसमें डाली गयी इसलिए ये जो plagrism है वो चेक हो सकें, synopsis भी चेक हो सके। आप जो काम करने जा रहें हैं वो दोहरा तो नहीं रहा है। महोदय ने अपने वक्तव्य में सूचना एवं संचार तकनीकी पर विस्तार पूर्वक चर्चा की और बताया कि जाहिर सी बात है हम बहुत आगे निकल गए हैं, इस सूचना एवं संचार तकनीकी को लेकर हम कहाँ तक जाऐंगे।

प्रो. सिंह ने बताया कि Pathos, यानि आपका सम्प्रेषण उसको विश्लेश्षण करके आगें बढें, Ethos जिसमें नैतिकता का मॉडल हो, Ethics हो, Nagos जिसमें लॉजिक प्रवील करती हो, अपनी बातों को सिद्व करने के लिए लॉजिक का सहारा लेते हो। ये संम्प्रेषण के तीन पिलर है, ये तीन Diamention है इन्हीं तीनों Diamention से संम्प्रेषण होता है।

कुलपति महोदय प्रो.सुरेन्द्र प्रताप सिंह (L.N.M.U. Darbhanga) सेमिनार में प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करते हुए।

राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन के Plenary Session का समापन **अनुराधा कुमारी** (सहायक प्राध्यापिका, संत जोसेफ्स एम.एस.वी.एम. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ जिसमें इन्होंने सभी आमंत्रित अतिथितियों, विषय विशेषज्ञों, शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों, कर्मियों तथा विशेष रूप से सभी प्रतिभागियों के प्रति अपना अभार व्यक्त किया।

Technical Session-2 (19.03.2023, Time: 11:15AM- 01:00 PM) :-

Topic :- i. Role of ICT In teaching Language
ii. Role of ICT In teaching Science
iii. Impact of ICT in last 10 years

अध्यक्ष : डॉ. रमा सुब्बैया,
सह अध्यक्ष : डॉ.रविकांत,
विषय विशेषज्ञ : डॉ. गुलाम मोहम्मद अंसारी, डॉ. विवेकानंद सिंह, सुश्री मौसमी कुमारी
समन्वयक : डॉ. सरिता कुमारी
सह समन्वयक : मोहम्मद तौकीर
तकनीकी सहायक : रौशन कुमार, अभय कुमार
मंच संचालिका : नेहा कुमारी (बी.एड. 2021–23)

द्वितीय सत्र के आरंभ में **सुश्री मौसमी कुमारी** (C.T.E., Samastipur, Bihar) ने तकनीकी सत्र में अपने वक्तव्य में पिछले 10 वर्षो में आई.सी.टी. क्या प्रभाव पड़ा इस पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि एक जगह प्राथमिक शिक्षक का Induction Training चल रहा था वहां पर शिक्षक को कॉपी, पेस्ट नही करना आ रहा था, PPT बनाना नही जान रहे

थे। हम बोल बहुत कुछ रहे हैं लेकिन धरातल स्तर पर बहुत पीछे है। हमें आई.सी.टी की जानकारी के मामले में छात्रों से ज्यादा जानना होगा। प्रो० आशीष श्रीवास्तव सर ने TPACK यानि Technical, Pedagogical, Assessment, Content , Knowledge की बात की थी। आपलोगों को स्टडी मेटेरियल का वीडियो और साथ लिंक भी दिया जाता होगा, वो आपको सिर्फ गाईड करता है कि आपको समुद्र में गोता नहीं लगाना, आप कॉनटेन्ट के बारे में बहुत सी चीजों को जाने, साथ मे आपको इन्टरेक्शन का भी मौका दिया जाता है। आपको Content, Pedagogy के साथ तकनीकी को भी अपने में समृद्ध करना होगा। हमलोग Knowledge Adoption कर रहे है फिर Chage for Knowledge Production, Knowledge Generation की बात करते है।

तकनीकी सत्र में व्याख्यान देते हए **सुश्री मौसमी कुमारी**

विषय विशेषज्ञ सुश्री मौसमी कुमारी के पश्चात **डॉ. विवेकानंद सिंह** (पूर्व प्राचार्य, संत जोसेफ्स मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय) ने तकनीकी सत्र 2 में अपने उद्बोधन में कहा कि आप सभी ये जान ले कि किताबों में, गूगल पर बहुत सी जानकारी आई.सी.टी. के बारे में हैं लेकिन मुद्दा वही है कि किताबों में बहुत कुछ रहते हुए यदि स्वयं में भी धारण नही किया जाए तो वह आई.सी.टी. हो कोई भी चीज हो सफल नही होगा। सवाल ये नही है कि दिनभर उन चीजों पर चर्चा करें, सवाल ये हैं कि उनको प्रयोग में लायें, आई.सी.टी. आज के दिन में ज्यादा प्रचलित हुआ है ये बात नही है हमलोगों ने इसको प्रयोग करने में काफी देर लगा दिया है। ये सूचना के स्किल हैं ये आज से नहीं है मैं याद दिला दूँ, चाहे रामायण काल हो, चाहे महाभारत काल हो, चाहे वैदिक काल हो सभी ने इस कौशल का प्रयोग किया था लेकिन इसकी महत्ता को किसी ने नही समझा। हमने सीरियल में, फिल्मों में, यूट्यूब पे सभी जगह के लोगों को प्रयोग करते देखा लेकिन कभी स्वयं धारण करने के लिए आगे नही बढ़े। उस कोराना काल का अभी–अभी मौसमी मैंम ने बताया कि कौन लोग गूगम मिट, वाटससेप पर जूम मिटिंग जानते थे? आई.सी.टी. का प्रयोग करने के लिए एजूकेशनिष्ट होना जरूरी नही है। सारी भाषाओं में तकनीकी का प्रयोग करने के लिए एपीलिकेशन उपलब्ध है, यह हमारी समस्याओं का समाधान कर देती है। एक उदाहरण मैं बताउ पहले आप पोस्ट ऑफिस में मनीऑडर करने जाते थे, तो पैसा पहुंचने में सप्ताह लग जाता था। अब इस काम को आप आई.सी.टी. के माध्यम से मिनटों में कर लेते हैं। अभी भी हमारे सारे तकनीकी का आधार कही न कही कोई प्राचीन ज्ञान ही होता है जिस हम खड़े उतरते हैं। किसी ने कहा होगा, किसी ने देखा होगा, किसी ने पढ़ा होगा कि हम सेकेंड में बात कैसे कर सकते है? याद करे महाभारत काल का वो सीन जब संजय धृतराष्ट्र को कुरूक्षेत्र में हो रही युद्व के बारें में बता रहा था, वो भी एक कौशल ही है जिसको आज मोबाईल या यूटयूब के माध्यम से देख रहे है। मोबाईल बिल्कुल संजय की भूमिका निभा रहा है, संजय तो चित्र नही दिखाता था हम संजय से भी एक कदम आगे हो गए है संजय तो सिर्फ कहानियां सुना रहा था हम वीडियो कॉल के माध्यम से फोटो भी दिखा सकते हैं। क्या ये छोटी बात है? मैं एक बात और रखना चाहता हूँ कि यदि आपकों एक अच्छी गाड़ी दे दी जाए तो प्लीज उसकी स्पीड पर ध्यान मत दे, आप अपने स्किल पर ध्यान दें। आई.सी.टी. जितनी अच्छी

है उतनी ही खतरनाक भी हो सकती है। आई.सी.टी. से सीखनी है तो आपको अपने अन्दर जिज्ञासा लानी होगी। शोध इस बात को कहती है कि किसी भी चीज का विकास तभी होगा जब उसके सामने समस्यायें होगी।

डॉ. विवेकानंद सिंह तकनीकी सत्र में व्याख्यान देते हुए।

डॉ. गुलाम मोहम्मद अंसारी (Principal Oriental college of Education siso, Darbhanga) ने तकनीकी सत्र में अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि भाषा शिक्षण में आई.सी.टी. महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, छात्र इसके माध्यम से बार–बार अभ्यास करके भाषा संबंधी त्रुटि को सुधार करता है। उन्होंने एक उदाहरण दिया, दादा और पोते का रिश्ता बहुत अटूट होता है। मैं एक छोटी सी कहानी के माध्यम से आई.सी.टी. के बारें में बताउगाँ। एक दिन पोता उदास बैठा था, दादा ने पूछा उदास क्यों हों? पोता ने कहा मैं दिल्ली में सोउगा कैसे? वहां मुझे लोड़ी कौन सुनाएगा? दादा ने कहा मैं सारी लोड़ियो को रिकॉर्ड करके पेन ड्राईव में दे दूगाँ। आप सोते समय सुन लेना। कुछ दिन बाद पोता दिल्ली से अपने दादा को फोन करके कहता है कि मैं कई दिनों से नही सो पा रहा हूँ। दादा ने कहा लोड़ी नही सूनते हो। पोता ने कहा लोड़ी तो सुनता हूँ लेकिन वो थपकी कहां से लाऊ जो आप मेरे कंधे पर दिया करते थे। इसका तात्पर्य यह है कि समय के साथ हमें अपने अन्दर परिवर्तन लाना होगा, अगर नही लाते हैं तो हमारा अस्तित्व समाप्त हो सकता है। हमें अपने शिक्षक होने के अस्तित्व को बचाना है तो आई.सी.टी. को स्वीकार करना होगा। आई.सी.टी. के साथ–साथ हम जिस परिवेश में रहते है उस परिवेश में उस परंपरागत शिक्षण और शिक्षण के कौशल को अपने अन्दर बनाये रखने में असमर्थ हैं तो फिर कभी भी हम अपने आप को फेल होने के लिए तैयार रहें। इसीलिए आई.सी.टी. को एडॉप्ट करें।

डॉ. गुलाम मोहम्मद अंसारी तकनीकी सत्र में अपने वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए।

डॉ. रविकांत (Professor & Head, Department of Education, Central University of South Bihar) ने तकनीकी सत्र में विज्ञान शिक्षण में आई.सी.टी कि भूमिका पर प्रकाश डालते हुए विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा

कि हर बात का दो पहलू होता है या कहा जाए कि किसी भी चीज की अति खराब होती है। With the use of ICT you can only share the information, you want to share the immolation it is not possible. जब कभी भी हम भावनाओं को व्यक्त करने की बात करते है वहां आई.सी.टी. काम नहीं आती है। आई.सी.टी. ठीक है हमारी जरूरत है। ICT Very much helping for us. You should use different types of tool, techniques in teaching. क्या हम भारतीय परंपरा को इग्नोर करके आई.सी.टी. को अपनाये। स्मार्ट शिक्षक बिना फोन के भी बन सकते हैं। मेरे शिक्षक या उनके पहले के शिक्षक के पास स्मार्ट फोन नहीं था लेकिन उन्होंने मुझे इस लायक बना दिया कि मैं आई.सी.टी. पर बात कर रहा हूँ। इस बात को दिमाग से निकाल दीजिएगा कि आई.सी.टी. का उपयोग करने वाला शिक्षक बहुत अच्छा होगा, जो आई.सी.टी. का उपयोग नहीं कर रहा है, वह अच्छा नहीं होगा। वह शिक्षक ऐसा चुनौती खड़ा कर देगा जिसका जबाब देने में आई.सी.टी. वाले शिक्षक उलझ जाएगें। शिक्षक यह बताता है कि कहां क्या चीज उपयोग करना है, कैसे करना है, कितने समय तक करना है।

डॉ. रविकांत तकनीकी सत्र में व्याख्यान देते हुए।

प्रस्तुतीकरण के बीच में इस सत्र के **सह समन्वयक मोहम्मद तौकीर** (सहायक प्राध्यापक, संत जोसेफ्स एम.एस.वी. एम. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय) ने प्रस्तुतीकरण कर रहे विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान का सार बताते हुए तकनीकी सत्र में प्रतिभागियों के साथ सम्पर्क स्थापित किया।

Finally, The Subject Experts Chairing the Session **Dr. (MS.) RAMAA Subbiah** (Former Professor of Special Education and Dean, of instruction, Regional Institute of Education, N.C.E.R.T. Mysore) said this one already how hole is the Implecation you no early we where using term micro teaching. Now, I think skill and stratigy in the so during this time skill all know how to use that ICT also the skill during that session. We are introduce that same one round that going to the cycle a repetation this one obiousally all the teacher and trainees they should able to use it and then practice it before going to the internship and also we have the say during the internship also some weightage can be given this is one. I agree that we are not using the handwriting now see halting yearly about recently capability . I am writing a letter, I was open expressing my feeling also, so whenever I was away that I use to write a letter to my parent. That some time is too ruff from our friend or some time may be to lecturer or any body faimaly member so we were writing very descriptively, Directly and adding all these facts.

Dr. (MS.) RAMAA Subbiah giving his speech in the technical Session

इस तकनीकी सत्र का समापन **मोहम्मद तौकीर** (सहायक प्राध्यापक, संत जोसेफ्स एम.एस.वी.एम. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें इन्होंने सभी आंमत्रित अतिथियों, विषय विशेषज्ञों, शिक्षकों, शोधार्थियों, प्रशिक्षुओं तथा विशेष रूप से सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उपर्युक्त टॉपिक पर सभी प्रशिक्षुओं एवं शोधार्थियों ने अपने–अपने आलेखों को प्रस्तुत किया।

Technical Session-3 (19.03.2023, Time: 02:00PM- 03:00 PM):-

Topic :- i. Role of ICT in Teaching Social Studies
ii. Role of ICT in Performing Mathematical Skills
iii. The Risk of Digital Learning

अध्यक्ष : डॉ. सुभाष चन्द्र रॉय
सह अध्यक्ष : डॉ. विक्रमजीत सिंह
विषय विशेषज्ञ : डॉ. राकेश कुमार, डॉ. मनिषा रानी, डॉ. एम. डी. फैज अहमद,
समन्वयक : ऋतुराज पांडेय,
सह समन्वय : प्रियंका
तकनीकी सहायक : आमोद कुमार पंडित, हेमंत कुमार
मंच संचालिका : नंदनी कुमारी (बी.एड. 2022–24)

डॉ. मनिषा रानी (Assistant Professor, School of Education, Mahatma Gandhi Central University, Motihari) **तकनीकी सत्र में** उद्बोधन देते हुए कहा कि हम जो शिक्षा की बात करते है उसके तीन पहलू है– Teaching, Learning and Curriculum. हम किस तरह से अपने शिक्षण में एवं अधिगम में आई.सी.टी. का उपयोग करें जिससे हमारी शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ें। हमने कोविड में देखा कि हम सभी तकनीकी को आत्मसात कर लियें। हमें नही लगता है कि कोई भी ऐसा होगा जो अभी तक आई.सी.टी. का उपयोग नहीं किया होगा, मोबाईल, इन्टरनेट से आप कुछ न कुछ देखते है,उपयोग करते है। ये सही तरह से करते तो हमारा लर्निग आउटकम अच्छा आएगा। हम जो तकनीकी ज्ञान, शिक्षणशास्त्र ज्ञान की बात करते है इनसे हमारा क्या अर्थ है? हम लोग Traditional pedagogy से Shift होकर Digital pedagogy में आ गये हैं। Contant knowledge के साथ किस तरह हम इसे जोड़ें। हम किस तरह इसे बच्चों के साथ जोड़े इन सब बातों पर ध्यान देना है। आप तकनीकी का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से करें।

तकनीकी सत्र में व्याख्यान देते हुए **डॉ. मनिषा रानी**

डॉ. एम. डी. फैज अहमद (Principal of M.A.N.U.U. C.T.E. Darbhanga) ने तकनीकी सत्र में छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि दिमाग में एक संरचना होनी चाहिए सेमिनार का जो टॉपिक है उस पर हम कुछ लिखें और कुछ न कुछ अवश्य बोलें। सबथिम में से किसी एक टॉपिक पर हम लिखते है मकसद यह होता है उसमें कुछ नया लिखें, वो नया करने के लिए हम कट, पेस्ट नहीं कर सकते, आज के दौर में शिक्षण में सही सूचना को प्राप्त करना सबसे बड़ी दिक्कत है। हर तीन धंटे में Particular सूचना में कुछ न कुछ परिवर्तन होते रहता है। जो चीज हमारे पास मौजूद है उसको हम कैसे गेदर करें। बच्चें हमेशा वही चीज सीखेगें जो उसकी आवश्यकता को पूरा करेंगे। शिक्षक के पास सही सूचना हो और उसे सम्प्रेषण का तरीका भी पता हो, तकनीकी हमेशा सपोर्ट के लिए होता है, उस सपोर्ट का उपयोग करके हम अपने शिक्षण को अच्छा कर सकते है। हमने एक छोटा शोध किया फिल्प कक्षा–कक्ष में पहले हम बच्चों को मेटेरियल (वीडियो) दे देते हैं, अगले दिन हम बच्चों से उसपर चर्चा करते है। जो बच्चे थे वो फिल्प कक्षा–कक्ष से कम समझ रहे थें और परंपरागत कक्षा–कक्ष से ज्यादा समझ रहे थें, वो कमी हमारे Temprament में थी, हमारे सोच में थी, हमने बच्चों को नहीं बताया था कि आप आई.सी.टी. के इस्तेमाल से शैक्षिक रूप से समृद्व हो सकते है। अगर मैं बताया होता तो बच्चें उसको पढ़ने के लिए उपयोग किये होते । आज के दौर में शिक्षक–प्रशिक्षण के लिए जरूरी है कि वो ना सिर्फ तकनीकी का इस्तेमाल करें बल्कि तकनीकी जागरूकता भी लाए। तकनीकी का बहुत ज्यादा हो जाना, सूचना का बहुत ज्यादा हो जाना, सम्प्रेषण के बहुत तरह के डिवाइसेस आ जाना एक अलग चीज है। हमें अपने जरूरत के हिसाब से क्या लेना है? कितना लेना है? उस पर ध्यान देना चाहिए। इसी उद्वेश्य से इस सेमिनार को Organised किया गया।

डॉ. एम. डी. फैज अहमद तकनीकी सत्र में व्याख्यान देते हुए।

अंत में इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे **विषय विशेष डॉ. सुभाष चन्द्र रॉय** (Former Head and Dean, North East Regional Institute of Education, N.C.E.R.T. Shilong Member ERC- NCTE) ने तकनीकी सत्र में छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि आप अच्छे से आई.सी.टी. को पढ़ें, इनसे सीखें, आपके शिक्षकों ने आपको इस स्तर तक पहुंचा दिया ये अच्छी बात है। सेमिनार मे पेपर लिखना एक बौद्धिक कार्य है और हर बौद्धिक कार्य का अपना नियम होता है, एक तरीका होता है। सेमिनार का पेपर कैसे लिखना है, आप लेख लिखते है तो वो क्या है? और वह सेमिनार के पेपर से अलग कैसे होता है? उसका क्या फॉर्मेट होता है, उसकी पंक्तियां कैसे लिखी जाती है, तथ्यों का कैसे विश्लेषण करते है। कोई विषय है तो उस पर कैसे सोचना है? एक पंक्ति दूसरे पंक्ति से कैसे जुड़ती है? एक पैराग्राफ दूसरे पैराग्राफ से कैसे जुड़ता है वो सब हमारे दिमाग में रहता है कि हम क्या करना चाहते है। अंत में हम देखते है कि हम जो कहना चाहते है वहां पहुंचे कि नही। हम जो कह रहे है वो हवा में कह रहे हैं कि हमारे पास कुछ आधार भी है। आप इन सभी चीजों को सीखेंगे। बिहार में शिक्षण बहुत ही कठिन दौर से गुजड़ रहा है आने वाले दिनों में आपलोगों के उपर बहुत सारी जिम्मेदारी है। इस तरह के अवसर आपकों जीवन में मिले तो अधिक से अधिक लाभ उठायें।

डॉ. सुभाष चन्द्र रॉय तकनीकी सत्र में विषय पर चर्चा करते हुए।

तृतीय तकनीकी सत्र में **अनुराधा कुमारी** (सहायक प्राध्यापिका, संत जोसेफ्स एम.एस.वी.एम. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय) ने सभी अतिथियों, विषय विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। उपर्युक्त टॉपिक पर सभी प्रशिक्षुओं एवं शोधार्थियों ने अपने–अपने आलेखों को प्रस्तुत किया। अंत में प्रश्नोत्तर सत्र में छात्रों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर भी दिया गया।

Mishri Singh Vishawamohinee Lectutre Series and discussion on out come of the seminar (19.03.2023, Time: 03:15 PM-04: 00 PM)

मुख्य अतिथि : डॉ राकेश कुमार
अतिथि : डॉ. रविकांत, सुश्री मौसमी कुमारी
मंच संचालिका : निधि सिंह (बी.एड. 2022–24)

मिश्री सिंह विश्वमोहिनी व्याख्यान श्रृंखला में वक्ता के रूप में **अनुराधा कुमारी** (सहायक प्राध्यपिका संत जोसेफ्स मिश्री सिंह विश्वमोहिनी मेमोरियल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय) ने स्वर्गीय मिश्री सिंह और विश्वमोहिनी जी के जन्म से लेकर उनके कार्य क्षेत्रों पर क्रमबद्व रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इन्हीं के प्रेरणा से यह महाविद्यालय पुष्पित, पल्लवित और सुरभित हो रहा है। आज वो जहां भी होंगे उनका हृदय अवश्य ही प्रसन्न हो रहा होगा, आज उनके लगाये हुए पेड़ में इतनी अच्छी सुगंध आ रही है। उनका सपना हम सभी साकार

कर रहे है। मुख्य अतिथि डॉ राकेश कुमार एवं डॉ. रविकांत, सुश्री मौसमी कुमारी ने भी सेमिनार के आउटकम पर अपने विचारों को रखा।

मिश्री सिंह विश्वमोहिनी व्याख्यान श्रृंखला में वक्तव्य देते हुए अनुराधा कुमारी

Valedictory Session (19.03.2023, Time: 04: 00 PM on wards)

मुख्य अतिथि : डॉ० राकेश कुमार
अतिथि : डॉ. रविकांत, सुश्री मौसमी कुमारी, डॉ सुजीत कुमार द्विवेदी, डॉ गुलाम मोहम्मद अंसारी,
मंच संचालिका :अनुराधा कुमारी (सहायक प्राध्यापिका, संत जोसेफ्स एम.एस.वी.एम. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय)

राष्ट्रीय सेमिनार के समापन सत्र का आरंभ **अनुराधा कुमारी** (सहायक प्राध्यापिका) के स्वागत वक्तव्य के साथ हुआ। अनुराधा कुमारी अपने स्वागत वक्तव्य में इस सत्र में आमंत्रित अतिथियों के शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण योगदानों पर प्रकाश डालते हुए सेमिनार के अपने अनुभवों को सभी के समक्ष रखा। उन्होंने कहा कि सेमिनार के लिए विभिन्न राज्यों से आयें प्रतिभागियों ने पुरी तन्मयता के साथ इसके विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लिया, जो इस बात का परिचायक है कि यह सेमिनार कहीं न कहीं अपने निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। संत जोसेफ्स शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन के लेकर उद्दिष्ट है। इन्होंने सेमिनार के दो दिनों के विभिन्न सत्रों का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए आमंत्रित अतिथियों को सेमिनार में आयोजित विभिन्न क्रियाकलापों से अवगत कराया। इसके पाश्चात कुछ विषय विशेषज्ञों तथा प्रतिभागियों ने अपने सेमिनार का अनुभव सभी के साथ सांझा किया। प्रतिभागियों ने सेमिनार आयोजन समिति के प्रयासों की सराहाना की तथा इसको एक शानदार शुरूआत के रूप में माना। उन्होंने कहा कि यदि ऐसे प्रयास जारी रहे तो यह भविष्य में शिक्षण अधिगम एवं शिक्षा के क्षेत्र में एक नया मील का पत्थर साबित होगा। इसी क्रम में एक विषय विशेषज्ञ ने कहा कि भविष्य मे जब कभी भारत में शिक्षण अधिगम एवं शिक्षा पर इतिहास लिखा जाएगा तो इस सेमिनार का जिक्र अवश्य किया जाएगा।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. राकेश कुमार ने बताय कि सूचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग साधन के रूप में करें। विश्व के किसी भी चीज की सूचना आप घर बैंठे ही आई.सी.टी. के माध्यम से ले सकते है। इन्होंने सेमिनार की सफल आयोजन की शुभकामानाएँ भी दी।

समापन सत्र में मंचासिन अतिथिगण

इस सत्र में महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों, प्राध्यापिकाओं, तकनीकी सहायकों को समानित किया गया, साथ ही वोलिंटियर, मंच संचालक एवं रिपोटर को भी पुरस्कृत किया गया। इसमें मंच संचालन अनुराधा कुमारी के द्वारा किया गया और इस सेमिनार का समापन **मोहम्मद तौकीर** (सहायक प्राध्यापक, संत जोसेफ्स एम.एस.वी.एम. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दलसिंहसराय) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें इन्होंने सभी आमंत्रित अतिथियों, विषय विशेषज्ञों, शिक्षकों, शोधार्थियों, प्रशिक्षुओं, कर्मियों तथा विशेष रूप से सभी प्रतिभागियों के प्रति अपना अभार व्यक्त किया।

सेमिनार की झांकी

MEMORIAL

EMINENT SPEAKERS

Date: 18/03/2023

Prof. Awadh Kishore Roy
Chief Guest
Ex. Vice-Chancellor
Tilka Manjhi Bhagalpur University
And BNMU Madhepura

Prof. Gopal Krishna Thakur
Professor & Dean, School of Education, Dean, School of Management, Head, Department of Psychology, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi,

Prof. Asheesh Srivastava
Dean, School of Education
Mahatma Gandhi Central University, Motihari, East Champaran, Bihar

Prof. Lalit Kumar
Former Dean, Faculty of Education and Head, Department of Education, Patna University, Patna

Dr. D. N. Singh
Former Dean, Faculty of Education, L. N. M. U. Darbhanga

DR. (MS) RAMAA S.
Guest of Honour
Former Professor of Special Education, and Dean of Instructions, RIE, NCERT, Mysore

Dr. Rakesh Kumar
Former, Principal CTE, Bhagalpur, and Dean, Education, Tilka Manjhi University, Bhagalpur, Bihar

Dr. Gyandeo Mani Tripathy
Dean, Faculty of Education
Aryabhatt Knowledge University, Patna

Prof. Vinay Kumar Choudhary
Former HOD, Education Department, L. N. M. U. Darbhanga, MLA, Benipur, Darbhanga

Dr. Masud Alam Khan
HOD, Department of Education
L. N. M. U. Darbhanga

Dr. A. K. Milan
Principal, DDE LNMU (Regular)
L. N. M. U Darbhanga

Ms. Moushmi Kumari
CTE, Samastipur

Date: 19/03/2023

Prof. Subhas Chandra Roy
Former Head and Dean,
North East Regional Institute of Education, NCERT, Shillong
Member, ERC-NCTE

Dr. Ravi Kant
Prof. & Head, Department of Education, Central University South Bihar, Gaya

Prof. Md. Faiz Ahmad
Principal of MANUU CTE Darbhanga

Dr. Rakesh Kumar
Former, Principal CTE, Bhagalpur, and Dean, Education, Tilka Manjhi University, Bhagalpur, Bihar

Dr. Vikramjit Singh
Associate Professor,
St. Xavier's College of Education, Patna

Dr. Manisha Rani
Assistant Professor
School of EducationMahatma Gandhi Central University Motihari

Dr. Sujeet Kumar Dwivedi
HOD, BMA College
Baheri, Darbhanga

Dr. G. M. Ansari
Principal, Oriental College of Education, Siso, Darbhanga

Ms. Moushmi Kumari
CTE, Samastipur

Dr. Vivekanand Singh
Associate Professor
Department of Education
Magadh University Bodhgaya